

ISBN : 978-81-69939-03-4

Vol. No. 05, Sl. No. 05



ब्रह्मावर्त निर्झरिणी

Brahmavart Nirjharni

महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका

Articles & Creative Writings Published in both Hindi & English



2026

ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज

मन्धना, कानपुर - 209 217

Ownership : The Principal, Prof. (Dr.) V.K. Katiyar, Brahmavart PG College, Bithoor Road, Mandhana, Kanpur

Published by : Ira Publishers, Kanpur

Laser Type Setting & Printed by Satguru Stationers & Printers, Kidwai Nagar, Kanpur



प्रार्थना

वीणावादिनी वर दे ।

प्रिय स्वतन्त्र रव, अमिय मन्त्र नव, भारत में भर दे, वर दे ।

वीणावादिनी वर दे ।

काट अन्ध उर के बन्धन स्तर, बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर ।

कलुष भेद तम हर प्रकाश भर, जगमग जग कर दे, वर दे ।

वीणावादिनी वर दे ।

नव-गति, नव-लय ताल छन्द नव, नवल कण्ठ, नव जलद मन्द रव ।

नव-नभ के विहग वृन्द को, नव-पर नव स्वर दे, वर दे ।

वीणावादिनी वर दे ।

ब्रह्मावर्त निर्झरिणी Brahmavart Nirjharni

Editorial Board

Prof. (Dr.) V.K. Katiyar
Dr. Amit Kumar Dubey
Dr. Bappa Adhikari
Shri Dinesh Kumar

Magazine Name : ब्रह्मवर्त निर्झरिणी / Brahnavart Nirjharni

Multidisciplinary Journal

Articles & Creative Writings published in both Hindi & English Languages

Owner & Patron : Prof. (Dr.) V.K. Katiyar, Principal, Brahnavart P.G. College, Mandhana, Kanpur

Contact :

E-mail : bvpg.mandhana@yahoo.in

Website : <https://bvpgcollege.in/>

Published By : Ira Publishers

Contact :

E-mail : irapublishers@gmail.com

Website : <https://irapublishers.in/>

Aim & Scope : The "**Brahnavart Nirjharani**", as a creative as well as academic initiative taken by Brahnavart P.G. College, Mandhana, Kanpur, is a multidisciplinary, annual journal for research articles and creative writings in both Hindi and English languages. Currently, the journal invites articles in the domain of multidisciplinary research areas and creative writing in both Hindi and English. Apart from these, research works in literature, culture, religion, translation, ethnicity and nationalism, sign language, science, technology and software development related are also encouraged in the above-mentioned languages. It intends to inspire writers, poets and artists to create new works that contribute to the cultural heritage of the region. It aims to encourage critical thinking and intellectual discussions on various topics related to Indian culture and history. The authors strictly adhere to the conditions proposed by the editorial board.

About Us : "**Brahnavart Nirjharani**" is a magazine dedicated to create intellectual temperament and cultivate the creative faculty of the young minds. Our mission is to promote cultural heritage, fostering intellectual discourse, and providing informative content. We strive to provide high-quality content, encourage critical thinking, or inspire positive change. Our team of experienced editors is committed to delivering insightful analysis and engaging creativity.

Editorial Board (2026)

Name	Institutional Designation	Department/ Subject	Official Postal Address	E-mail Address
Prof. (Dr.) V.K. Katiyar	Principal	Physics	Brahmavart P.G. College Mandhana, Kanpur-209217	vkkatiyar_kn05@ csjmu.ac.in
Dr. Amit Kumar Dubey	Assistant Professor	Hindi	Brahmavart P.G. College Mandhana, Kanpur-209217	amitkumart3340kn10 @csjmu.ac.in
Dr. Bappa Adhikari	Assistant Professor	English	Brahmavart P.G. College Mandhana, Kanpur-209217	bappaadhikarit3767 kn10@csjmu.ac.in
Shri Dinesh Kumar	Assistant Professor	Economics	Brahmavart P.G. College Mandhana, Kanpur-209217	dineshkumarsis13131 kn10@csjmu.ac.in

Brahmavart Nirjharni
Multidisciplinary Journal
Vol. No. 05 Sl. No. 05

ब्रह्मावर्त महाविद्यालय कुलगीत

ज्ञान मन्दिर है ये, ज्ञानार्जन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
उच्च शैक्षिक केन्द्र की संकल्पना से,
नाम ब्रह्मावर्त हो इस धारणा से।
नीव है उन्नीस सौ सत्तर में स्थापित,
उत्तरी गंगा के तट पर है विराजित।
श्रेष्ठता का आओ उद्बोधन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
सृष्टि की उद्गम धरा पर हम खड़े हैं,
वीणापाणि माँ की ममता में बड़े हैं ।
ब्रह्मा का आवर्त ब्रह्मावर्त है ये,
भाल का टीका, हमारा गर्व है ये ।
भाव की रोली से अभिनन्दन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
शास्त्र संस्कृति और कला की वीथिका है,
षष्ठ रागों से सुसज्जित गीतिका है ।
आधुनिक तकनीक का संकाय है ये,
ज्ञान और विज्ञान का पर्याय है ये ।
बोध की गंगा में अवगाहन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
जानकी माँ से मिली संवेदनाएँ,
लक्ष्मीबाई सी प्रखर हैं बालिकाएँ ।
बालको में तेज है लवकुश सरीखा,
राष्ट्रभक्ति शील और अनुराग सीखा ।
सत्य का सम्पूर्ण अनुशीलन करें हम,
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
त्याग, तप, बलिदान की पावन धरा है।
प्रेम और सौहार्द से परिसर भरा है ।
नित नए आयाम गढ़ते जा रहे हैं,
छात्र-शिक्षक यश-ध्वजा फहरा रहे हैं ।
दक्ष निर्देशन में ज्ञानार्जन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
साथ मिलकर दृढ़ प्रतिज्ञा यह करें हम,
उत्तरोत्तर उन्नयन पथ पर बढ़ें हम ।
राह की कठिनाइयों का भान होगा,
जीत होगी लक्ष्य का संधान होगा ।
जय विजय उद्घोष और गर्जन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥

डॉ० संजू शब्दिता

आनंदीबेन पटेल

राज्यपाल, उत्तर प्रदेश



राज भवन

लखनऊ - 226 027

05 जून, 2026

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज, कानपुर द्वारा सत्र 2025-26 की वार्षिक पत्रिका 'ब्रह्मावर्त-निर्झरणी' का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय की पत्रिका विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति, साहित्यिक प्रतिभा, बौद्धिक चेतना तथा सांस्कृतिक संवेदनशीलता का सशक्त दर्पण होती है। यह उन्हें अपने विचारों, अनुभवों एवं नवोन्मेषी दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करने का सुअवसर प्रदान करती है तथा उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। आशा है कि प्रकाश्य पत्रिका विद्यार्थियों में ज्ञानार्जन, रचनात्मक चिन्तन, सकारात्मक दृष्टिकोण एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को और अधिक सुदृढ़ करेगी। साथ ही, यह उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने तथा राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करेगी।

मैं पत्रिका 'ब्रह्मावर्त-निर्झरणी' के सफल प्रकाशन हेतु मैं हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन
(आनंदीबेन पटेल)



छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर – 208024
(पूर्ववर्ती कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर)
यू.जी.सी. श्रेणी - I विश्वविद्यालय
Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur - 208024
(Formerly Kanpur University Kanpur)
U.G.C. Category - I University



प्रो० विनय कुमार पाठक
कुलपति
Prof. Vinay Kumar Pathak
Vice Chancellor

17 जून, 2026



शुभ सन्देश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज, मन्धना, कानपुर सत्र 2025–26 की अपनी वार्षिक पत्रिका 'ब्रह्मावर्त—निर्झरिणी' का प्रकाशन करने जा रहा है।

किसी भी शैक्षणिक संस्थान की वार्षिक पत्रिका केवल लेखों, कविताओं और रचनाओं का संकलन मात्र नहीं होती, बल्कि वह विद्यार्थियों और शिक्षकों की सृजनात्मक ऊर्जा, बौद्धिक विमर्श, साहित्यिक अभिरुचि तथा मौलिक चिन्तन का सशक्त प्रतिबिम्ब होती है।

'ब्रह्मावर्त—निर्झरिणी' पत्रिका के माध्यम से किये जाने वाले प्रयास विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा, विचारों और भावनाओं की अभिव्यक्ति हेतु एक सशक्त मंच प्रदान करते हैं। इसके माध्यम से उनमें साहित्य, कला, संस्कृति, विज्ञान एवं समसामायिक विषयों के प्रति रुचि विकसित होती है तथा उनकी विश्लेषणात्मक सोच, रचनात्मकता और आत्मविश्वास को नई दिशा मिलती है।

इन्हीं कामनाओं के साथ महाविद्यालय के उत्तरोत्तर उन्नयन एवं प्रकाशित होने वाली पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु **बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ**।

प्रो० (डॉ.) वी.के. कटियार
प्राचार्य
ब्रह्मावर्त पी.जी. कॉलेज, मन्धना
कानपुर।

(प्रो० विनय कुमार पाठक)
कुलपति



प्रमिला पाण्डेय महापौर



दूरभाष :

सी.यू.जी. : 8601801010

आवास : 9415044433

कैम्प कार्या० फैंक्स : 2549680

कैम्प कार्या० : नगर निगम गेस्ट हाउस

निवास : 8/2, एफ०एम० कालोनी

सिविल लाइन्स, कानपुर



दिनांक : 09.02.2026

महोदय,

आपके स्वकीय कार्यालय पत्रांक 400 / 2025-26 दिनांक 31.01.2026 के माध्यम से मुझे यह जानकारी अति प्रसन्नता हुई कि ब्रह्मावर्त डिग्री कॉलेज, मन्धना, कानपुर वर्तमान सत्र 25-26 की वार्षिक पत्रिका 'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी' का प्रकाशन करने जा रहा है।

महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाले वार्षिक पत्रिका छात्र-छात्राओं एवं शिक्षिकाओं/शिक्षकों की रचनात्मकता को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए न केवल प्रेरित करता है और पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराता है, बल्कि उनकी विविध क्षेत्रों में उनके विकास के लिए फलक भी प्रदान करता है, जहाँ तक मैं समझती हूँ कि यह पत्रिका महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों में प्रगति एवं उसके विकास को भी प्रदर्शित करती है।

मैं प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी' के सफल प्रकाशन की शुभकामना करती हूँ।

(प्रमिला पाण्डेय)

प्रतिष्ठा में,

प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार
प्राचार्य,
ब्रह्मावर्त डिग्री कॉलेज,
मन्धना, कानपुर ।



mayor.kanpur-up@gov.in



@mayorkanpur



/mayorkanpur

डॉ० बी०एल० शर्मा
निदेशक, उच्च शिक्षा, उ०प्र०



उच्च शिक्षा निदेशालय उ०प्र०
सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज-211001
0532-2623874 (का०)
ई-मेल infodheup21@gmail.com

पत्रांक.....

दिनांक 24 / 02 / 2026

सन्देश

यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि ब्रह्मावर्त डिग्री कॉलेज, मन्धना, कानपुर अपनी वार्षिक पत्रिका 'ब्रह्मावर्त निर्झरणी' सत्र 2025-26 का प्रकाशन करने जा रहा है। यह पत्रिका न केवल विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्तियों का माध्यम है, बल्कि महाविद्यालय की उपलब्धियों, गतिविधियों और गौरवपूर्ण क्षणों को भी सहेज कर रखती है।

मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के लिए अभिव्यक्ति का एक अच्छा माध्यम होने के साथ ही अपने उद्देश्य की प्राप्ति में अवश्य सफल होगी। साथ ही, इसमें महाविद्यालय के शिक्षण-शिक्षणेत्तर क्रियाकलापों से सम्बन्धित आवश्यक सामग्री एवं ज्ञानवर्धक लेखों का समावेश किया जायेगा।

वार्षिक पत्रिका 'ब्रह्मावर्त निर्झरणी' के सफल प्रकाशन हेतु मैं प्राचार्य, प्राध्यापकों एवं छात्र-छात्राओं को अपनी हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ

डॉ०(बी०एल० शर्मा)

सेवा में
प्रो० वी०के० कटियार
प्राचार्य
ब्रह्मावर्त डिग्री कॉलेज
मन्धना, कानपुर।



छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

(पूर्ववर्ती कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर)

(Formerly Kanpur University Kanpur 208 024)



प्रो० राजेश कुमार द्विवेदी
निदेशक—महाविद्यालय विकास परिषद

दिनांक : 10-02-2026



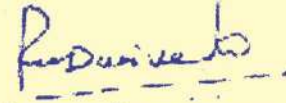
शुभकामना सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि ब्रह्मावर्त डिग्री कॉलेज, मन्धना, कानपुर द्वारा सत्र 2025–26 की वार्षिक पत्रिका 'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी' का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका महाविद्यालय की शैक्षणिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का सजीव दर्पण है। ऐसी पत्रिकाएँ विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करती है तथा उनमें नवचिन्तन, अनुसन्धानशीलता और सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करती है। शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न होकर व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व के बोध से भी जुड़ी है। "ब्रह्मावर्त निर्झरिणी" इसी उद्देश्य की सार्थक अभिव्यक्ति है।

मुझे विश्वास है कि यह अंक विद्यार्थियों, प्राध्यापकों एवं पाठकों के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध होगा तथा महाविद्यालय की गरिमा और उपलब्धियों को नई ऊँचाइयों तक ले जाएगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु प्राचार्य महोदय, सम्पादकीय मण्डल एवं समस्त छात्र-छात्राओं को हार्दिक शुभकामनाएँ।

सादर शुभकामनाओं सहित,


(प्रो० राजेश कुमार द्विवेदी)

कार्यालय : क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी
सी०एस०जे०एम० विश्वविद्यालय परिसर
कानपुर मण्डल कानपुर

प्रोफेसर राजेश प्रकाश

अर्धशासकीय पत्र सं०/5977/2025-26
दिनांक 10/02/26

शुभकामना-सन्देश

प्रिय महोदय,

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपका महाविद्यालय अपनी वार्षिक पत्रिका "ब्रह्मावर्त निर्झरणी" का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिका में जो लेख प्रकाशित होंगे उसको पढ़कर सुधीजन लाभान्वित होंगे।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं शुभकामनाएं देता हूँ।



प्रोफेसर राजेश प्रकाश
क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी
कानपुर मण्डल, कानपुर

प्रो० (डॉ०) वी० के० कटियार
प्राचार्य
ब्रह्मावर्त डिग्री कॉलेज, मन्धना
कानपुर नगर।



Mob. No. : 8090024069

Brahmanand Post Graduate College

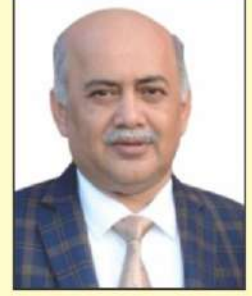
The Mall, KANPUR-208004

E-mail : bndkanpur@gmail.com • Website : brahmanandcollege.org.in

Ref. :

Date : 06 / 03 / 26

सेवा में
प्रो० वी०के० कटियार
प्राचार्य
ब्रह्मावर्त डिग्री कॉलेज
मन्धना, कानपुर।



विषय : महाविद्यालय की पत्रिका (ब्रह्मावर्त निर्झरणी) हेतु सन्देश प्रेषण।
महोदय,

अत्यन्त आश्वस्त और हर्ष का विषय है कि छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर से सम्बद्ध महत्वपूर्ण महाविद्यालय ब्रह्मावर्त डिग्री कालेज, मन्धना, कानपुर अपनी वार्षिक पत्रिका **ब्रह्मावर्त निर्झरणी (2025-26)** का प्रकाशन करने जा रहा है।

विगत 55 वर्षों से आपकी संस्था सतत कला, विज्ञान और वाणिज्य में आधुनिक ज्ञान और विज्ञान की प्रदीप्त मशाल लिए हुये कानपुर नगर के ज्ञानाकाश को आच्छादित कर रही है। यहाँ के विद्यार्थियों ने देश और विदेश में अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करते हुए आपके महाविद्यालय को गौरवान्वित किया है। मैं आशा करता हूँ कि आपके नेतृत्व में यह संस्था उत्तरोत्तर सफलता की ऊँचाइयों को प्राप्त करेगी।

मैं **ब्रह्मावर्त निर्झरणी** के सम्पादक डॉ० अमित कुमार दुबे एवं उनके साथी सदस्यों के प्रयास की सफलता के लिए अन्तरतम से आशीर्वाद एवं शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

भवदीय

(प्रो० विवेक द्विवेदी)
प्राचार्य

Virendra Kumar Shukla
Advocate
Secretary
Brahmavart P.G. College
Mandhana, Kanpur - 209217



Estd. : 1970
Office : 0512-2549745
Residence : 0512-2680442
Mob. : 9839217675
104/432, P.Road, Kanpur
E-mail : bvpg.mandhana@yahoo.in
Website : www.bvpgc.co.in

Permanent Affiliation : CSJM University, Kanpur
(Approved U/S 2(f) and 12(B) of UGC Act 1956)

Ref. :

Date :

सन्देश

प्रिय विद्यार्थियों, आदरणीय शिक्षकगण एवं पत्रिका समिति के सभी सदस्यों, आप सभी को हमारे महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन पर हृदय से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

एक महाविद्यालय केवल कक्षाओं और परीक्षाओं का स्थान नहीं होता, बल्कि यह विचारों, सृजनात्मकता और प्रतिभा का संगम स्थल होता है। यह पत्रिका हमारे छात्रों की लेखनी, कल्पनाशक्ति और वैचारिक समृद्धिका सजीव प्रमाण है। कविमता, कहानी, निबन्ध, चित्र और लेखों के माध्यम से आपने जिस उत्साह से अपनी भावनाएँ व्यक्त की हैं, वह अत्यन्त सराहनीय है।

मैं पत्रिका समिति के संयोजक, शिक्षकों और उन सभी विद्यार्थियों का विशेष आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अथक परिश्रम करके इस पत्रिका को सफल बनाया। आपका यह प्रयास आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनेगा।

मेरी कामना है कि यह पत्रिका हमारे महाविद्यालय की गौरवशाली परम्परा को आगे बढ़ाए और विद्यार्थियों को अपने विचार निर्भीकता से रखने के लिए प्रोत्साहित करे। आशा है, यह पत्रिका न केवल पृष्ठों तक सीमित रहेगी, बल्कि विचारों की उड़ान बनकर हर मन को छुएगी। यह नवांकुरों को लेखनी उठाने और अपनी आवाज को समाज तक पहुँचाने का सम्बल दे।

भविष्य के लिए अनन्त शुभच्छाओं के साथ।

वीरेन्द्र कुमार शुक्ल 'एडवोकेट'

सचिव



प्राचार्य का सन्देश

प्रिय छात्र-छात्राओं एवं समस्त प्राध्यापकगण,

यह मेरे लिए अत्यन्त हर्ष का विषय है कि हमारा महाविद्यालय अपनी वार्षिक पत्रिका 'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी' का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा है। पत्रिका किसी भी शैक्षणिक संस्थान की आत्मा होती है। इसमें विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, चिन्तनशीलता और बौद्धिक ऊर्जा प्रतिबिम्बित होती है।

आज का युग ज्ञान, विज्ञान और तकनीक का युग है। ऐसे समय में साहित्य, कला और संस्कृति के प्रति अनुराग बनाए रखना ही हमें संवेदनशील और संस्कारवान नागरिक बनाता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री अर्जित करना नहीं, अपितु मनुष्य को विवेकशील, संवेदनशील और राष्ट्र के प्रति समर्पित नागरिक बनाना है। इस पत्रिका में संकलित कविताएँ, निबन्ध, आलेख एवं शोधपरक रचनाएँ इसी उद्देश्य की साक्षी हैं। यहाँ विद्यार्थियों की मौलिक सोच, कल्पनाशीलता और भाषा पर अधिकार स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। यह निःसन्देह हमारे गौरव की बात है।

मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका में संकलित रचनाएँ आपके भीतर छिपी प्रतिभा को नयी उड़ान देगी। इस पत्रिका के प्रकाशन में परिम करने वाले सम्पादक मण्डल, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को मैं हृदय से बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। आशा है यह अंक आप सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

स्नेह एवं शुभकामनाओं सहित !

प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार
प्राचार्य

सम्पादकीय

प्रिय पाठकों,

किसी भी शैक्षणिक संस्थान की पत्रिका केवल कागज और स्याही का संकलन नहीं होती, वरन् वह उस संस्थान की बौद्धिक चेतना, सांस्कृतिक चेतना और विद्यार्थी मन की धड़कन होती है। प्रस्तुत अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार सन्तोष और गर्व का अनुभव हो रहा है।

साहित्य समाज का मुखर स्वर है और पत्रिका उस स्वर की प्रतिध्वनि। आज जब हम वैश्वीकरण के दौर में खड़े हैं, तब अपनी भाषा, साहित्य और संस्कृति को समझना और संजोना अत्यावश्यक हो गया है। इसी दृष्टि को ध्यान में रखकर इस पत्रिका में कविता, कहानी, निबन्ध, आलेख एवं शोधपरक लेखों को स्थान दिया गया है। प्रत्येक रचना विद्यार्थियों के मौलिक चिन्तन और सृजनशीलता का परिचय देती है।

हमें विश्वास है कि ये अंक आपके मन को स्पर्श करेगा, सोच को दिशा देगा और नवोदित लेखकों को लेखनी उठाने के लिए प्रेरित करेगा। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका केवल पढ़ी नहीं बल्कि जीयी भी जायेगी। यह नये लेखकों को प्रेरणा देगी, पुराने पाठकों को सोचने पर विवश करेगी और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बौद्धिक धरोहर बनकर रहेगी। हमारा संकल्प है कि यह पत्रिका केवल एक वार्षिक दस्तावेज न रहे, अपितु एक सतत संवाद बने। यह संवाद विद्यार्थी और शिक्षक के बीच, परम्परा और आधुनिकता के बीच, 'स्व' और 'विश्व' के बीच। "चरैवेति चरैवेति" – यही हमारा मन्त्र है।

पत्रिका का निर्माण एक सामूहिक साधना है। इसके लिए महाविद्यालय के माननीय प्राचार्य प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार जी का मार्गदर्शन, शिक्षकगणों का सहयोग और विद्यार्थियों का उत्साह सदैव प्रेरणास्रोत रहा। सम्पादक मण्डल के परिश्रमी साथियों ने अथक मेहनत से इस अंक को आकार दिया है। हम उन सभी लेखकों के आभारी हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं से इस पत्रिका को समृद्ध किया।

आशा है यह अंक आपको न केवल पढ़ने का आनन्द देगा, बल्कि सोचने, प्रश्न करने और सृजन करने की प्रेरणा भी देगा। आपकी आलोचना, सुझाव और आशीर्वाद हमारे अगले अंक की दिशा तय करेंगे।

अन्त में, माँ भारती से प्रार्थना है कि वह हमारी लेखनी को ऋजुता दें, हमारे विचारों को निर्मलता दें और हमारे संकल्प को सिद्धि दें।

आपकी प्रतिक्रियायें और सुझाव हमारे लिए सदैव मूल्यवान रहेंगे। अन्त में, शब्दों की इस यात्रा को आप सबके स्नेह को समर्पित करते हैं।

सधन्यवाद !



डॉ० अमित कुमार दुबे
सम्पादक

सम्पादक मण्डल



प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार
प्राचार्य



सम्पादक
डॉ० अमित कुमार दुबे



सह-सम्पादक
डॉ० बप्पा अधिकारी



सह-सम्पादक
डॉ० दिनेश कुमार गौतम



सदस्य
डॉ० चन्द्रकिशोर शास्त्री



सदस्य
डॉ० दिव्या भदौरिया



सदस्य
श्री अजय कुमार मिश्र



सदस्य
श्री अंकुर मिश्र

महाविद्यालय के वार्षिक आयोजन

अभिव्यक्ति : वार्षिक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रम

शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ छात्रों का सह-शैक्षणिक गतिविधियों में भागीदारी करना शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग है। इसी विचार से महाविद्यालय में छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ वर्ष भर सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। सत्र 2022-23 से प्रतिवर्ष “अभिव्यक्ति” वार्षिक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र / छात्राओं को वीणापाणि सम्मान, अमेय सम्मान, तानसेन संगीत पुरस्कार, यंग अचीवर्स अवार्ड, स्टार परफार्मर अवार्ड आदि पुरस्कारों से प्रमाणपत्र तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया जाता है।

उल्लास : वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता

स्वस्थ शरीर के लिए शारीरिक व्यायाम तथा खेलकूद की महत्ता के दृष्टिगत वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता “उल्लास” का आयोजन महाविद्यालय प्रांगण में सत्र 2022-23 से प्रारम्भ हो गया है। प्रतिभावान् खिलाड़ियों को महाविद्यालय स्तर से आर्थिक सहायता भी प्रदान की जाती है। वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता उल्लास के अन्तर्गत विविध खेल जैसे लम्बी कूद, ऊँची कूद, चक्का फेंक, 100 मी० दौड़, 400 मी० दौड़ आदि खेलों का आयोजन किया जाता है। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान अर्जित करने वालों को प्रमाणपत्र तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया जाता है एवं सभी प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागी को विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

प्लेसमेण्ट कार्यक्रम

महाविद्यालय की प्लेसमेण्ट समिति द्वारा व्यावसायिक कौशल (Professional Efficiency) के विकास हेतु कार्यशाला का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है, जिसमें छात्र-छात्राओं को रिज्यूम बनाना, पी०पी०टी० बनाना, साक्षात्कार की बारीकियों से अवगत कराना, ग्रुप डिस्कशन के बारे में बताना तथा व्यावसायिक कुशलता की बारीकी से अवगत कराया जाता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)

राष्ट्रीय सेवा योजना राष्ट्र की युवा शक्ति के व्यक्तित्व विकास हेतु युवा कार्यक्रम एवं खेल मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित एक सक्रिय कार्यक्रम है, जिसकी गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थी, समाज के लोगों के साथ मिलकर

समाज के हित में कार्य करते हैं। इसका सिद्धान्त और आदर्श वाक्य हैं- “मैं नहीं आप (Not Me But You)” जो “वसुधैव कुटुम्बकम्” का सार बताता है। यह निःस्वार्थ सेवा की भावना का समर्थन और दूसरे के दृष्टिकोण की सराहना करने व प्राणिमात्र के लिए सहानुभूति रखने का आग्रह करता है। जिसका मुख्य उद्देश्य स्वैच्छिक सामुदायिक सेवा के जरिए छात्रों के व्यक्तित्व एवं चरित्र का विकास करना है। इसी उद्देश्य से ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज, मन्थना, कानपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) इकाई का गठन शिक्षा सत्र 2021-22 में हुआ और तब से लेकर अद्यतन यह गतिमान है, जिससे महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके और राष्ट्र निर्माण / उत्थान में वो अपना योगदान दे सके।

रोवर्स-रेंजर्स

व्यक्तित्व का विकास सफलता की कुंजी है। रोवर्स-रेंजर्स के माध्यम से छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है। समाजसेवा के अवसर रोवर्स-रेंजर्स के माध्यम से प्राप्त होते हैं। निःस्वार्थ भाव से, त्याग के भाव से समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार की समस्याओं को दूर करने में रोवर्स-रेंजर्स व्यक्तिगत एवं संगठित रूप से अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं।

वस्तुतः रोवर्स-रेंजर्स युवाओं का एक ऐसा स्वयंसेवी, गैर-राजनीतिक, शैक्षिक आन्दोलन है, जो प्रत्येक मनुष्य के लिए भेदभाव किए बिना प्रत्येक जाति, धर्म, वर्ग के लिए अपनी सेवाएं देने को तत्पर रहता है। यह 1907 में संस्थापक लॉर्ड वैडेन पॉवेल द्वारा संचालित किए गए लक्ष्य, सिद्धान्त तथा पद्धति के अनुरूप अपने कार्यों का निष्पादन करता है।

महाविद्यालय में रोवर्स-रेंजर्स इकाई स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य छात्रों के बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास कर राष्ट्र के लिए सुयोग्य नागरिक तैयार करना है। महाविद्यालय की रोवर्स-रेंजर्स इकाई का नाम राष्ट्र की निःस्वार्थ सेवा भावना से ओत-प्रोत विवेकानन्द तथा निवेदिता के नाम पर **विवेकानन्द-निवेदिता रोवर्स-रेंजर्स इकाई** रखा गया है। इस इकाई में पंजीकृत महाविद्यालय के छात्र प्रत्येक वर्ष विशेष प्रशिक्षण के माध्यम से अपने व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास कर सामाजिक उत्तरदायित्व की समझ, विपरीत परिस्थितियों में कार्य करने की समझ, समाज में व्याप्त कुरीतियों, गरीबी, बेरोजगारी, शिक्षा आदि से परिचित होते हैं और उनके समाधान हेतु प्रयास करते हैं। जन जागरूकता, राष्ट्र के प्रति संवेदनशीलता, जाति-धर्म-वर्ग-लिंग आदि से परे होकर सेवा भावना अपने अन्दर विकसित करते हैं, जरूरतमन्द लोगों की मदद कर अपने अन्दर दया एवं करुणा का भाव विकसित करते हैं, प्रत्येक वर्ष रक्तदान करते हैं तथा पुरातात्विक धरोहरों की रक्षा करना अपना कर्तव्य समझते हैं।

महाविद्यालय की रोवर्स-रेंजर्स इकाई द्वारा प्रत्येक वर्ष विशेष प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता है। प्रशिक्षण प्राप्त शिविरार्थियों को सर्टिफिकेट प्रदान किया जाता है। महाविद्यालय में रोवर्स की एक (01) यूनिट तथा रेंजर्स की दो (02) यूनिट का गठन किया गया है। विशेष प्रशिक्षण शिविर में प्रतिभाग करने वाले छात्र अनुशासित, सामाजिक समझ एवं समय के पाबंद तथा सहयोग की भावना से युक्त अपने देश के प्रति निष्ठावान हो जाते हैं।

सत्र 2025-26 की विशेष उपलब्धियाँ

- ★★ महाविद्यालय में 23 जुलाई, 2025 को अमरशहीद चन्द्रशेखर आजाद की जयन्ती के शुभ अवसर पर एक दिवसीय अभिलेख प्रदर्शनी तथा संगोष्ठी उत्तर प्रदेश राजकीय लेखागार, संस्कृति विभाग, लखनऊ; ब्रह्मानन्द महाविद्यालय, कानपुर तथा ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज, मन्थना, कानपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई।
- ★★ उक्त प्रदर्शनी में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के प्राध्यापक एवं शोध छात्रों ने सहभागिता कर संगोष्ठी को सफल बनाया।
- ★★ महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के असि०प्रो० डॉ० अमित कुमार दुबे के निर्देशन में एक शोध छात्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग के प्रो० पुष्पेन्द्र कुमार सिंह के निर्देशन में एक शोध छात्र (पी-एच०डी०) हेतु पंजीकृत हुए।
- ★★ महाविद्यालय के हिन्दी विभाग की छात्रा शिवांगी ने यू०जी०सी० (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) नेट परीक्षा उत्तीर्ण कर तथा कई छात्रों ने पी-एच०डी० हेतु क्वालीफाई कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया।
- ★★ महाविद्यालय की एम०ए० द्वितीय सेम० की छात्रा ने बिठूर महोत्सव में अपनी एकल शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुति से तथा बी०ए० द्वितीय सेम० की छात्रा तान्या वर्मा और उनकी टीम ने नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति से महाविद्यालय को गौरवान्वित किया।

हिन्दी साहित्य में आत्मकथा लेखन : अस्मिता और प्रतिरोध के स्वर

प्रखर शुक्ल
शोधार्थी, हिन्दी विभाग

शोधसार-

स्त्री आत्मकथा लेखन केवल घटनाओं का विवरण मात्र नहीं है, बल्कि यह आधी आबादी के सच को शब्द देकर समाज के सत्य को पकड़ने की एक कोशिश है। प्रस्तुत शोध आलेख हिन्दी साहित्य में स्त्री आत्मकथाओं के उद्भव एवं विकास की रोचक यात्रा की पड़ताल करता है। यह आलेख इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे स्त्री आत्मकथाएँ आज मुख्यधारा के साहित्य और समाज को आकार दे रही हैं। आज का स्त्री आत्मकथा साहित्य 'स्व' से विस्तारित होकर 'सर्व' तक विस्तृत हो गया है। अपनी आत्मकथा के माध्यम से लेखिकाएँ सम्पूर्ण समाज के ढाँचे की पड़ताल करती हैं। यह आलेख इस तथ्य को उद्घाटित करता है कि कैसे स्त्री आत्मकथा लेखन पितृसत्तात्मक व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिरोध के औजार के रूप में प्रभावी सिद्ध हुआ है। इस आलेख में जानकी देवी बजाज से लेकर समकालीन लेखिकाओं तक के जीवन के निजी पहलू का सार्वजनिक में रूपान्तरण का रेखांकन किया गया है।

बीज शब्द - स्त्री आत्मकथा, अस्मिता, पितृसत्ता, देह की राजनीति, स्त्री चेतना, प्रतिरोध।

प्रस्तावना-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक होने के कारण मनुष्य में खुद को अभिव्यक्त करने की इच्छा बहुत ही स्वाभाविक और नैसर्गिक है। बातें और विचार ही समाज के जटिल ताने-बाने को निर्मित करती हैं। इसके साथ ही मनुष्य के प्रत्येक कार्य के मूल में अवचेतन स्तर पर सुख प्राप्त करने की अभिलाषा प्रेरक तत्त्व के रूप में कार्य करती रहती है। रजनीश ओशो कहते हैं कि खुद को अभिव्यक्त कर पाने का सुख जीवन का सबसे बड़ा सुख है। साहित्य की विविध विधाएँ वास्तव में खुद को अभिव्यक्त करने या बात कहने के ही विभिन्न रूप हैं। साहित्य की हर विधा एक नई दुनिया खोलती है, जिसमें बात कहने के ढेरों अन्दाज हैं। ऐसे में गौर करने की बात है कि समाज के हाशिए की अस्मिताओं ने खुद को अभिव्यक्त करने के लिए आत्मकथा विधा को ही क्यों चुना? कुछ तो खास बात है आत्मकथा में, जो वर्षों से पृष्ठभूमि में मौन खड़ी स्त्री ने भी खुद को भी सर्वाधिक सहज महसूस किया, इसके जरिए अभिव्यक्त करने में। शायद मनुष्य की मूल प्रकृति के सर्वाधिक अनुकूल है आत्मकथा विधा। एक विधा के तौर पर हिन्दी आत्मकथा का इतिहास बहुत पुराना नहीं है।

साहित्य की समस्त विधाओं में 'आत्मकथा' एक ऐसी विधा है, जहाँ रचनाकार स्वयं को केन्द्र में रखकर समाज और समय का विश्लेषण करता है। विशेषकर आधुनिक साहित्य के परिदृश्य में, हाशिए पर स्थित समुदायों-विशेषकर स्त्रियों और दलितों- ने अपनी अस्मिता की खोज और आत्म-अभिव्यक्ति के लिए आत्मकथा को एक सशक्त माध्यम के रूप में चुना है। जहाँ पारम्परिक समाज में स्वयं के बारे में बात करना या अपनी उपलब्धियों का बखान करना 'आत्ममुग्धता' का परिचायक माना जाता था, वहाँ स्त्रियों द्वारा अपने निजी जीवन के अनुभवों को सार्वजनिक करना एक क्रांतिकारी और

साहसी कदम रहा है।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो हिन्दी आत्मकथा का स्वरूप समय के साथ अधिक समावेशी और यथार्थवादी हुआ है। आदिकाल और मध्यकाल के रचनाकारों ने जहाँ अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए 'कविता' की ओट ली, वहीं आधुनिक युग में गद्य के माध्यम से स्त्री के 'भोगे हुए यथार्थ' को बिना किसी आवरण के प्रस्तुत किया गया। मध्यकालीन युग में मीराबाई और दक्षिण भारत की अंदाल जैसी कवियित्रियों के काव्य में स्त्री के आत्म की तड़प स्पष्ट दिखाई देती है, किन्तु वहाँ वह भक्ति और 'रहस्य' के आवरण में सुरक्षित थी। इसके विपरीत, आधुनिक स्त्री आत्मकथाएँ उन जंजीरों को तोड़ती हैं, जो स्त्री की अभिव्यक्ति को 'रहस्य' या 'काल्पनिकता' तक सीमित रखती थी।

स्त्री आत्मकथाओं के विकास में 'थेरीगाथा' का सन्दर्भ अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह प्राचीन भारत की बौद्ध भिक्षुणियों की ये निर्भीक आवाजें हैं, जिन्होंने न केवल पितृसत्तात्मक ढाँचे को चुनौती दी, बल्कि निर्वाण और स्वतन्त्रता के मार्ग पर स्त्री की उपस्थिति को दर्ज कराया। सुमंगलामाता जैसी भिक्षुणियों का यह स्वीकार करना कि वे अपने घरेलू दायित्वों और अपमानजनक वैवाहिक जीवन से मुक्त होकर सुखी हैं, स्त्री अस्मिता के आरम्भिक साक्ष्य प्रस्तुत करता है।

समकालीन समय में कौशल्या वैसन्त्री की 'दोहरा अभिशाप' और सुशीला टाकभौरे की 'शिकजे का दर्द' जैसी रचनाओं ने स्त्री विमर्श को एक नई दिशा दी है। ये आत्मकथाएँ न केवल लिंग के आधार पर होने वाले भेदभाव को उजागर करती हैं, बल्कि जातिगत उत्पीड़न के उस 'दोहरे बोझ' को भी रेखांकित करती हैं, जिसे दलित स्त्रियाँ सदियों से ढोती आ रही हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य स्त्री आत्मकथाओं के माध्यम से यह समझना है कि कैसे ये रचनाएँ केवल व्यक्तिगत जीवन का विवरण मात्र न रहकर, एक व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक दस्तावेज बन जाती हैं। यह अध्ययन स्त्री के उस 'सार्वजनिक जगत' की पड़ताल करेगा, जहाँ वह अपनी चुप्पी तोड़ती है और एक ऐसे समतामूलक समाज की कल्पना करती है, जहाँ उसकी संवेदनाओं और अनुभवों को उनकी समग्रता में स्वीकार किया जाए।

मुख्य भाग -

स्त्री, जो हजारों वर्षों से मौन होकर पुरुष की परछाई बनकर चलती रही। समाज ने, धर्म ने उससे यही अपेक्षा की; तिस पर भी धार्मिक नियम बनाकर उस पर और भी भावनात्मक निर्बंधन लगा दिए। समाज ने उसके सामने सती-सावित्री जैसे चरित्र रखे और उसके अवचेतन मन में यह बात गहरे से बैठा दी गई कि- एकइ धर्म एक व्रत नेमा। कायँ वचन मन पति पद प्रेमा (रामचरितमानस, तुलसीदास)। उसके जीवन का परम लक्ष्य सिर्फ इन्हीं मानकों पर खुद को खरा उतरना रहा क्योंकि पति चाहे जैसा भी हो लेकिन उसको हर समय वफादार रहना था, अन्यथा उसे नरक में असहनीय पीड़ा भोगना पड़ेगा। हालांकि वैसे भी इन सामाजिक वर्जनाओं ने जीते जी मानसिक स्तर पर कम नरक नहीं भोगने पर विवश किया स्त्री को। सबसे रोचक और दुखद बात यह रही कि सिर्फ भारतीय समाज में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में स्त्री की यही दुर्दशा रही और बल्कि इससे भी भयानक, क्योंकि जहाँ एक ओर भारतीय समाज में उस पर इतने नियम लादे गए, वहीं दूसरी ओर प्रत्येक स्त्री को पूजनीय और दैवीय दर्जा दिया गया। हालांकि यह भी बहस का विषय रहा है कि जमीनी हकीकत क्या रही?

आधुनिक काल में स्त्रियों ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए, सभी बेड़ियों को तोड़ दिया। आत्मकथा के माध्यम से न सिर्फ उन्होंने खुद को अभिव्यक्त किया, बल्कि समाज के दोहरे मानदण्डों को खुले तौर पर चुनौती दी।

हिन्दी आत्मकथा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और स्त्री हस्तक्षेप -

हिन्दी साहित्य में आत्मकथा लेखन की विधा अन्य विधाओं की तुलना में विलम्ब से विकसित हुई। हिन्दी की पहली आत्मकथा बनारसीदास जैन द्वारा 1641 ई० में लिखित 'अर्द्धकथानक' को माना जाता है। हिन्दी में विधिवत औपचारिक रूप से इसका सूत्रपात सन् 1932 में मुन्शी प्रेमचन्द द्वारा सम्पादित 'हंस' के आत्मकथांक' से माना जाता है। प्रारम्भिक दौर में यह विधा मुख्य रूप से पुरुष रचनाकारों तक सीमित थी, जहाँ सार्वजनिक जीवन की उपलब्धियों को केन्द्र में रखा जाता था। स्त्रियों का इस क्षेत्र में आगमन केवल एक साहित्यिक घटना नहीं, बल्कि एक सामाजिक हस्तक्षेप था। छठे दशक के अन्त में जानकी देवी बजाज की आत्मकथा 'मेरी जीवन यात्रा' (1956) का प्रकाशन इस दिशा में एक मील का पत्थर साबित हुआ। यद्यपि बजाज जी भूदान आन्दोलन से जुड़ी सक्रिय कार्यकर्ता थीं और उनका व्यक्तित्व उनके पति जमनालाल बजाज के सहयोग से निखरा था, किन्तु उनकी आत्मकथा ने यह सिद्ध किया कि स्त्री के पास कहने के लिए अपना एक स्वतन्त्र संसार और अनुभव है।

स्वतन्त्र 'आत्म' का उदय : स्फुरना देवी और प्रारम्भिक प्रयास -

शुरुआती दौर में 'सीमांतनी उपदेश' और 'एक हिन्दू विधवा की कहानी' जैसी कृतियों के बाद स्फुरना देवी की रचना 'अबलाओं का इन्साफ' (1927 ई०) ने स्त्री आत्मकथा लेखन को एक नई दिशा प्रदान की। इस रचना की विशिष्टता यह है कि इसमें आन्दोलन की पृष्ठभूमि के साथ-साथ स्त्री के निजी संघर्षों का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। शोध की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है कि यह आत्मकथा उस समय लिखी गई जब स्त्रियों के लिए 'स्व' का वर्णन करना वर्जना माना जाता था। भले ही इस रचना ने तत्काल प्रभाव से कोई व्यापक द्वार नहीं खोला, परन्तु इसने भविष्य की लेखिकाओं के लिए एक वैचारिक धरातल अवश्य तैयार किया।

पितृसत्तात्मक समाज और प्रतिशोध के स्वर -

स्त्री आत्मकथाओं में 'प्रतिरोध' का स्वर केवल व्यवस्था के विरुद्ध नहीं, बल्कि उस पितृसत्तात्मक दृष्टि के विरुद्ध भी है, जो स्त्री की अभिव्यक्ति को नियन्त्रित करना चाहती है। स्त्री जब अपने जीवन के यथार्थ को 'खुलेपन' के साथ दर्ज करती है, तो समाज उसे सन्देह की दृष्टि से देखता है। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की बेबाकी को अक्सर 'चरित्रहीनता' के आरोपों से दबाने का प्रयास किया जाता है। किसी लेखिका के निजी अनुभवों का सार्वजनिक होना उसके पारिवारिक और सामाजिक जीवन में जोखिम उत्पन्न करता है। इसके बावजूद, हिन्दी की महिला रचनाकारों ने अपनी संवेदना और सामाजिक समझ के बल पर इन वर्जनाओं को तोड़ा है। यह साहस ही उनके लेखन में 'प्रतिरोध के स्वर' को मुखर बनाता है।

दलित स्त्री आत्मकथा : हाशिए की अस्मिता और 'दोहरा अभिशाप' -

हिन्दी आत्मकथा साहित्य में दलित स्त्रियों का योगदान एक क्रान्तिकारी मोड़ है। कौशलया वैसन्नी की आत्मकथा

‘दोहरा अभिशाप’ इस सन्दर्भ में अत्यन्त प्रासंगिक है। मराठी लेखिकाओं- कुमुद पावड़े और नलिनी सोमकुंवर- की प्रेरणा से वैसन्त्री जी ने हिन्दी में उस अभाव को भरा, जिसे मुख्यधारा के साहित्य ने वर्षों तक अनदेखा किया था। उनकी आत्मकथा यह रेखांकित करती है कि एक दलित स्त्री के लिए शिक्षा प्राप्त करना और फिर अपने अनुभवों को लिपिबद्ध करना कितनी बड़ी चुनौती थी। उनका लेखन यह दर्शाता है कि उस समय इनी-गिनी दलित लड़कियाँ ही स्कूल-कॉलेज तक पहुँच पाती थीं। अतः उनका ‘आत्म’ केवल व्यक्तिगत नहीं रहता, बल्कि यह पूरे समाज के प्रति एक जवाबदेही बन जाता है। यहाँ ‘अस्मिता’ का अर्थ जाति और लिंग के दोहरे दमन को पहचानना और उसे चुनौती देना है।

साहित्यिक परिवेश का अभाव और अनुभव की प्रामाणिकता -

अधिकांश शुरुआती महिला आत्मकथा लेखिकाओं का कोई पारम्परिक ‘साहित्यिक परिवेश’ नहीं था। उन्होंने जो कुछ भी लिखा, यह उनकी सामाजिक समझ और भोगे हुए यथार्थ का परिणाम था। कौशल्या वैसन्त्री जैसी लेखिकाओं के लिए आत्मकथा लेखन स्वयं को इतिहास के पन्नों में दर्ज कराने की एक कोशिश थी। उनके अनुसार, हिन्दी में दलित महिला आत्मकथाओं के अभाव को दूर करना और अपनी उपस्थिति दर्ज कराना ही उनके लेखन का मुख्य उद्देश्य रहा है। यह ‘अनुभव की प्रामाणिकता’ ही स्त्री आत्मकथाओं को काल्पनिक उपन्यासों से अधिक प्रभावशाली और मारक बनाती है।

निष्कर्ष -

उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी साहित्य में स्त्री आत्मकथा लेखन केवल एक साहित्यिक विधा का विस्तार नहीं है, बल्कि यह सदियों से थोपी गई चुप्पी के विरुद्ध एक सशक्त सांस्कृतिक और सामाजिक ‘प्रतिरोध’ है। जानकी देवी बजाज की ‘मेरी जीवन यात्रा’ से लेकर कौशल्या वैसन्त्री के ‘दोहरा अभिशाप’ तक की यात्रा यह दर्शाती है कि स्त्री ने अपनी ‘अस्मिता’ को परिवार और समाज की संकीर्ण सीमाओं से बाहर निकालकर एक स्वतन्त्र पहचान के रूप में स्थापित किया है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि स्त्री आत्मकथाएँ ‘भोगे हुए यथार्थ’ की यह प्रामाणिक अभिव्यक्ति है, जो कल्पना पर आधारित उपन्यासों की तुलना में समाज को अधिक गहराई से झकझोरती है। जहाँ पितृसत्तात्मक समाज ने स्त्री के ‘खुलेपन’ को चरित्रहीनता के ठप्पे से दबाने की कोशिश की, वहीं इन लेखिकाओं ने निर्भीकता के साथ अपने संघर्षों को दर्ज कर पितृसत्ता के दोहरे मानदण्डों को उजागर किया है। विशेषकर दलित स्त्री आत्मकथाओं ने लिंग और जाति के जटिल अन्तर्सम्बन्धों को सामने लाकर साहित्य के लोकतन्त्रीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अन्ततः, ये आत्मकथाएँ केवल एक व्यक्तिका ‘आत्म’ नहीं, बल्कि एक समतामूलक और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण का स्वप्न पत्र है।

आधार ग्रन्थ सूची -

1. कुशवाहा, डॉ० रामाशंकर; हिन्दी में स्त्री-आत्मकथा लेखन, दिल्ली; अद्वैत प्रकाशन, 2024
2. चतुर्वेदी, पंकज; आत्मकथा की संस्कृति, दिल्ली; वाणी प्रकाशन, 2011
3. प्रेमचन्द (सम्पादक); हंस (आत्मकथा अंक), बनारस विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2010
4. वर्मा, महादेवी; श्रृंखला की कड़ियाँ, इलाहाबाद; लोकभारती प्रकाशन, 2008

पत्रिकाएँ एवं अन्य सन्दर्भ –

1. हंस (मासिक पत्रिका); स्त्री विमर्श और आत्मकथा पर केन्द्रित विशेष अंक
2. वागर्थ; भारतीय आत्मकथा लेखन के बदलते प्रतिमान
3. तद्भव; हाशिए का समाज और अभिव्यक्ति के खतरे

भारतीय भाषा और भारतीयता

प्रियंका कमल
शोध छात्रा (हिन्दी विभाग)

किसी राष्ट्र की संस्कृति तथा उसकी ऐतिहासिकता की परिचायक उसकी भाषा ही होती है। जिस प्रकार एक माता का अपने बच्चों के प्रति सम्बन्ध बहुत गहरा और आत्मिक होता है, उसी प्रकार भारतीय भाषा और भारतीयता का भी सम्बन्ध अत्यन्त गहरा, व्यापक तथा आत्मिक है। भाषा के द्वारा महज विचारों का आदान-प्रदान ही नहीं होता, बल्कि भाषा के द्वारा राष्ट्र की सांस्कृतिक, सामाजिक तथा वैचारिक चेतना का संचार होता है।

भारत एक बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक तथा बहुधार्मिक देश है। भारत के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की अपनी स्वतन्त्र भाषा है। भारतीय संविधान की अष्टम सूची में 22 भाषाओं को अपनी स्वतन्त्र पहचान मिली है। भारत की प्राचीन भाषाओं संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश से लेकर आधुनिक भारतीय भाषाएँ- तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, हिन्दी, मराठी, गुजराती आदि सभी ने भारतीय संस्कृति को सदैव से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर किया है। भारत की प्रत्येक भाषा के साहित्य में, लोककथाओं तथा दर्शन में भारतीय जीवन-शैली की अमिट छाप स्पष्ट रूप से झलकती है।

भारतीयता की परिचायक भौगोलिक क्षेत्र या राजनीतिक क्षेत्र ही नहीं है, बल्कि भारतीयता की असली पहचान तो उसकी संस्कृति है। भारतीय संस्कृति सम्पूर्ण विश्व में सर्वश्रेष्ठ है। सद्भावना, करुणा, समन्वय, सत्य और अहिंसा जैसे मूल्य ही तो भारतीय संस्कृति के संवाहक हैं। रामायण, महाभारत, वेद, उपनिषद्- सभी ने भारतीयता की भावना को भाषा के माध्यम से जीवन्त रखा है। भारतीय भाषाओं के साथ-साथ भारत की लोकभाषाओं और बोलियों ने भी सामान्य जनमानस में भारतीय संस्कारों तथा भारतीयता की परिभाषा को स्थापित करने का प्रशंसनीय कार्य किया है।

वर्तमान समय में वैश्वीकरण तथा तकनीकी विकास के कारण भाषिक क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन दिखाई देता है। आधुनिकता के इस दौर में अंग्रेजी का महत्व बढ़ता जाता रहा है, जिसके कारण भारतीय भाषाओं का महत्व घटता जा रहा है, जिसके कारण भारतीयता के संरक्षण की स्थिति भी बनी हुई है। अंग्रेजी का बढ़ता प्रभाव भारतीय भाषाओं तथा भारतीयता के संरक्षण के लिए एक चुनौती का विषय बना हुआ है। जिस प्रकार साहित्य और समाज का महन सम्बन्ध है, उसी प्रकार भारतीय भाषा और भारतीयता एक-दूसरे के पूरक हैं। भाषा के बिना भारतीयता की कल्पना अधूरी है और भारतीयता के बिना भाषा की। अतः भारतीयता की निरन्तरता के लिए आवश्यक है कि हम अपनी भाषाओं का उचित उपयोग तथा उनका सम्मान करें और समाज को भारतीय भाषा के प्रयोग के लिए प्रेरित करें।

सोशल मीडिया समाज को कम सामाजिक कर रहा है?

पक्षकार
गीतिका सिंह
बी०ए० चतुर्थ सेमेस्टर

यह एक गम्भीर और समायोजित विषय है कि क्या सोशल मीडिया हमें कम सामाजिक कर रहा है? मैं (गीतिका सिंह) इस प्रश्न के पक्ष में हूँ क्योंकि मैं मानती हूँ कि सोशल मीडिया हमें कम सामाजिक कर रहा है। सोशल मीडिया ने लोगों को जोड़ा तो है लेकिन सामाजिक होने की परिभाषा बदल दी है।

समाज विभिन्न विचारधाराओं का संगम होता है। लेकिन सोशल मीडिया के एल्गोरिदम हमें वही दिखाते हैं, जो हम पसन्द करते हैं। इससे हम अलग विचार वाले लोगों के प्रति असहिष्णु हो जाते हैं। अतः सोशल मीडिया हमें अपनी ही पसन्द के छोटे समूहों में बन्द कर देता है, जिससे वास्तविक सामाजिक सामन्जस्य बिगड़ रहा है।

आज के समय में हम असली जज्बात की जगह emoji भेजते हैं। हम दुःख में 'Sad' emoji और खुशी में हाय या क्लैप emoji भेजते हैं। लेकिन किसी के गले लगना, आँखों में देखकर बात करना या वास्तविक में किसी को सहायता प्रदान करना, ये जो Human Touch और Body Language है, वो Screen पर गायब है। बिना body language के सम्वाद (Communication) अधूरा रहता है, जिससे हम एक दूसरे के जज्बात (Emotions) को सही ढंग से नहीं समझ पाते हैं।

सोशल मीडिया एक टूल है। यह हमें उन लोगों से जोड़ता है, जो दूर हैं लेकिन अक्सर उन लोगों से दूर कर देता है, जो हमारे बगल में बैठे हैं। अगर इसका उपयोग सीमित न किया जाए तो ये इन्सान को बहुत अकेला कर देता है, जहाँ दिखाया तो बहुत है लेकिन असलियत कम है। “सोशल मीडिया ने हमें पूरी दुनिया से तो जोड़ दिया है, लेकिन पड़ोस के दरवाजे से दूर कर दिया है।”

सोशल मीडिया पर हर कोई अपनी जिन्दगी का सबसे बेहतरीन हिस्सा डालता है। इसे देखकर हमें लगता है कि हमारी जिन्दगी बोरिंग है। इस तुलना की वजह से हममें Insecurity और Social Anxiety बढ़ जाती है। इस डर से कि हम पीछे छूट रहे हैं। हम लोगों से मिलने के बजाय स्क्रीन पर उनकी जिन्दगी स्क्रोल करने में ज्यादा समय बिताते हैं।

Search और रील्स के जमाने में हमारी सुनने और समझने की क्षमता कम हो गयी है। किसी की लम्बी बात सुनना हमें बोरिंग लगता है, जबकि एक गहरी सामाजिक बातचीत के लिए हमें धैर्य (Patience) चाहिए होता है, जो सोशल मीडिया हमसे छीन रहा है।

“हमने digital दूरियाँ तो मिटा दी हैं, मगर Physical नजदीकियों में दीवारें खड़ी कर ली हैं।”

सोशल मीडिया की बात करें तो सबसे पहले डाटा के बारे में बात करना बहुत जरूरी है क्योंकि आजकल के बच्चे आटा कम डाटा ज्यादा कहते हैं। रोजगार के नजरिए से देखा जाए तो सोशल मीडिया एक सुलभ साधन है। Studycv.com की रिपोर्ट को माने तो 4 करोड़ लोग Linkdien को देखते हैं, अपने रोजगार के लिए तो ऐसे में सोशल मीडिया एक अभिशाप कैसे हो सकता है ?

सोशल मीडिया की ताकत है, जो बाबा से ढाबा से लेकर वो पीछे तो देखो कौन है से लेकर बचपन का प्यार लोगों को याद दिला दिया तो ऐसे में सोशल मीडिया एक अभिशाप कैसे हो सकता है ? सोशल मीडिया वह ताकत है, जिसने खान सर, विकास दिव्यकीर्ति सर जैसे शिक्षकों को हम सब के बीच लाकर शिक्षा को सरलता रूप से समझने के लिए आसान किया है। जिसने एक मामूली से इंजीनियर को बैजू रविन्द्र बना दिया।

सोशल मीडिया वह ताकत है, जो आप अपने घर बैठे ही दिल्ली से बोल रहे जाकिर खान को सुन सकते हैं; मध्यप्रदेश में बोल रहे जगजीत भगत को सुन सकते नोएडा में बोल रहे लल्लन टॉप वाले सौरभ द्विवेदी को सुन सकते हैं। सोशल मीडिया की इस अपार सफलता को भाये तो यह मीडिया फ्लैक्स में नहीं समा पाया है, इसलिए तो ITG ने एक अलग बिल्डिंग खरीद ली ताकि टैक्स को commidate किया जा सके।

सोशल मीडिया की ताकत से 100% प्लेसमेण्ट लेने वाले लोग फिर 30% घर ही रह जाते हैं क्योंकि यहाँ पर तो इतनी रिक्तियाँ हैं नहीं। यह सोशल मीडिया की ही ताकत है, जो आज एक बिहार (गाँव) की लड़की दिव्या तनवर IPS अधिकारी के पद पर है।

लोग सोशल मीडिया का सही इस्तेमाल क्यों नहीं कर पा रहे हैं ?

- ★ जागरूकता और समझ की कमी।
- ★ इण्टरनेट पर लिखी हर बात को सच मान लेना।
- ★ अपनी जिम्मेदारी नहीं समझते।
- ★ Viral होने की होड़ पड़ी है।
- ★ Followers और Likes का Increasing.
- ★ कानून और नियम की कमजोर जानकारी
- ★ Technology तो तेजी से बढ़ रही है पर समाज की सोच और नियम पीछे रह गये हैं।
- ★ Self control नहीं बना पा रहे हैं।

अक्सर यह कहा जाता है कि सोशल मीडिया ने लोगों को एक-दूसरे से दूर किया है। लेकिन अगर इसको गहराई से सोचें तो यह एक एकतरफा प्रतीत होता है। वास्तव में सोशल मीडिया समाज को असामाजिक नहीं बल्कि सामाजिकता के स्वरूप को बदल रहा है।

सबसे पहले हमें यह समझना होगा कि एक आमने-सामने मिलना ही सामाजिकता प्रतीत है। इसने तो जुड़ाव, संवाद, सहभागिता को एक नया मंच प्रदान किया है। आज लोग भौगोलिक सीमाओं से परे एक-दूसरे से जुड़ रहे हैं। दूर बैठे रिश्तेदार, अलग-अलग संस्कृतियों के लोग एक-दूसरे से संवाद कर रहे हैं। यह असामाजिकता नहीं बल्कि वैश्विक सामाजिकता का उदाहरण है। सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को सशक्त बनाया है। जो लोग अपनी बात किसी के सामने से नहीं कह पाते थे, वो आज अपनी बात बिना डरे बोल पाते हैं।

पहले रक्त ढूंढना बहुत मुश्किल होता था, जिसकी वजह से तो कई लोगों की जान भी चली जाती थी। पर आज सिर्फ एक post से हजारों की भीड़ में रक्त को पाना सम्भव हो गया है। हाँ यह सच है कि सोशल मीडिया का अत्यधिक या गलत उपयोग समस्याएँ पैदा कर सकता है, यदि इसके लिए स्वयं सोशल मीडिया को दोष देना उचित नहीं। खराबी उपयोग में नहीं उपयोगकर्ता में है। जैसे आग भोजन बनाने का भी काम करती है और जलाने का भी यदि अमृत पीने का शौक है तो विष का पान करना भी आना चाहिए।

हमें आवश्यकता है सन्तुलन, विवेक और जिम्मेदारी की ताकि हम डिजिटल दुनिया में रहते हुए भी मानवीय मूल्यों को बनाए रख सकें, यह तभी सम्भव है जब हम इसका सही इस्तेमाल करें।

HOW LPG MODEL IS BENEFICIAL FOR GROWTH OF COUNTRY

Ashutosh Singh
M.A. 4th Semester

The LPG model refers to the policy of Liberalization, Privatization and Globalization, introduced in India in 1991 under Prime Minister P.V. Narsimha Rao and Finance Minister Manmohan Singh.

LPG Model and Growth of a Country :

The LPG model plays an important role in the economic growth of a country. Liberalization removes unnecessary government restrictions and allows industries to grow freely. Privatization transfers ownership of public sector enterprises to private players, improving efficiency and reducing losses. Globalization connects the country with the world economy, increasing trade, investment and technology transfer. Due to LPG reforms, competition increasing which improves the quality of goods and service. Foreign direct investment (FDI) brings capital, advanced technology and employment opportunities. It also increases export and strengthens foreign exchange reserve. The model encourages innovation and entrepreneurship by giving more freedom to business.

Overall LPG reforms help in faster industrial development, economic expansion, job creation and higher living standards it transforms a closed economy into an open and competitive one, leading to sustainable long-term growth .

Advantages :

1. Increase in foreign investment
2. Higher economical growth rate
3. Better quality goods and services
4. More employment opportunities
5. Technological advancement
6. Encourages private sector efficiency

Disadvantages :

1. Increased inequality
2. Small industries may suffer
3. Risk of foreign dominance
4. Job insecurity due to privatization
5. Over dependence on global market
6. Reduction in government control over key sector

बाजारवाद के युग में बिगड़ी भारत की संस्कृति

रिजवान

एम०ए० द्वितीय सेम० (अर्थशास्त्र)

देखिए बाजारवाद का सीधा सम्बन्ध आपकी संस्कृति और आपकी सभ्यता से है, इन दोनों में विपरीत सम्बन्ध होता है। बाजारवाद तभी फलेगा फूलेगा, जब वह आपकी संस्कृति और सभ्यता को नष्ट कर दे।

देखिए बाजार बात आपको सिर्फ एक उपभोक्ता बनाना चाहता है और आपको उपभोक्ता तभी बनेंगे, जब आप अपनी संतुष्टि और सफलता दोनों ही भौतिक संसाधनों में ढूँढने लगेंगे जबकि भारतीय संस्कृति और सभ्यता में आपकी संतुष्टि और सफलता अध्यात्म में बताई गई है अथवा आत्म संयम स्वयं को जानना और अपनी इन्द्रियों को और मन पर विजय प्राप्त करना लेकिन बाजारवाद यह नहीं चाहता है कि आप कभी अपने आप को जान पाएँ और आत्म संयम बने, बाजारवाद यह चाहता है कि आप अपनी पहचान और संतुष्टि और सफलता के लिए भौतिक संसाधनों पर निर्भर हो। बाजारवाद यह चाहता है कि आप हमेशा अपूर्ण (अधूरा) अनुभव करें और आप अपने आप को पूर्ण (पूरा) करने के लिए भौतिक संसाधनों को प्राप्त करें ताकि बाजारवाद फल फूल सके।

इस बाजारवाद ने हमारे संयुक्त परिवारों को भी तोड़ कर एकाकी परिवार में परिवर्तित कर दिया है जबकि भारतीय संस्कृति और सभ्यता में संयुक्त परिवार का महत्व है। जहाँ संयुक्त परिवार में हमारा समय चाचा, ताऊ, भाई-बहन, भतीजे इन सबके साथ बिताता था, अब वह समय हमारे television-smartphone इत्यादि digital gadgets ने ले ली हैं। अब हमारे घर में सदस्यों की जगह बाजार की वस्तुओं ने ले ली है और बाजारवाद यही चाहता है।

वैश्वीकरण के युग में कहीं आगे रहने की प्रतियोगिता में हम जिनकी नकल कर रहे हैं, उनकी नकल करने के चक्कर में भारत अपने मूल स्वभाव को तो नहीं खो रहा है जो कि अध्यात्म आत्म नियन्त्रण और स्वयं को जानना है।

एक बात हमेशा याद रखिए अगर शेर कुत्ता बनने की कोशिश करेगा तो वह ना कुत्ता बन सकता है और ना ही वह पूर्णरूप से शेर रह जाएगा क्योंकि प्रकृति ने उसे शेर बनाया है कहीं हमारा हाल भी ऐसा ही तो नहीं।

आज हमारी सफलता और संतुष्टि जिन भौतिक संसाधनों पर निर्भर करती है, वह रेगिस्तान में मृगमरीचिका के समान है (जिसका प्रकार हिरण को दूर पानी दिखने का भ्रम होता है लेकिन वह वहाँ जाता है तो वास्तव में पानी होता नहीं)।

आत्मनिर्भर भारत

आकृति शर्मा
एम०ए० द्वितीय सेम०

आत्मनिर्भर भारत वह अवधारणा है, जो भारत को आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य को दर्शाती है। यह विचार भारतीय जनता और सरकार दोनों की ओर से अपनाया गया है ताकि देश की विकास यात्रा में आत्मनिर्भरता की भावना को बढ़ावा दिया जा सके। इसका लक्ष्य है कि भारत अपने संसाधनों और क्षमताओं के प्रभावी उपयोग से सभी आवश्यक सामान, सेवाएँ और प्रौद्योगिकी विकसित कर सके और बाहर के देशों पर न्यूनतम निर्भरता रहे।

आत्मनिर्भरता के इस अभियान ने आर्थिक विकास, रोजगार सृजन और घरेलू उद्योगों को प्रोत्साहन देने पर बल दिया है। इसके तहत कृषि, निर्माण, टेक्नोलॉजी और अन्य क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा मिला है। सरकार ने विभिन्न योजनाओं और नीतियों के माध्यम से छोटे और मध्यम उद्यमों को सहारा दिया है, जिससे वे अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ा सके। इससे न केवल घरेलू बाजार में मजबूत स्थिति बनती है बल्कि निर्यात की क्षमता भी सुधरती है।

पक्षपात : एक छुपी हुई समस्या

रेनू दीक्षित
एम०ए० चतुर्थ सेम० (अर्थशास्त्र)

पक्षपात का अर्थ है किसी व्यक्ति या समूह के साथ बिना उचित कारण के अलग व्यवहार करना, उसका आधार चाहे जो भी हो। यह एक ऐसी समस्या है, जो अक्सर दिखती नहीं, लेकिन गहराई से समाज को प्रभावित करती है।

शिक्षण संस्थानों तथा कार्यस्थलों पर भी कभी-कभी पक्षपात का प्रभाव देखने को मिलता है। जब निर्णय निष्पक्षता के बजाय व्यक्तिगत पसन्द या पूर्वाग्रह पर आधारित होते हैं तो न्याय तथा समानता दोनों प्रभावित होते हैं। इससे प्रतिभा दब जाती है तथा आत्मविश्वास कमजोर होता है।

समाधान क्या है? अपने विचारों और व्यवहार में निष्पक्षता लाना आवश्यक है। शिक्षा, जागरूकता और संवेदनशीलता के माध्यम से ही हम एक ऐसे समाज का निर्माण कर सकते हैं, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यता के आधार पर सम्मान और अवसर मिले।

अंततः यह लेख लिखने का मेरा उद्देश्य यह है कि पक्षपात की समस्या पर आपका ध्यान आकृष्ट कर सकूँ। इस समस्या को खत्म करना ही सच्ची समानता की दिशा में पहला कदम है।

THAT IS NOT JUST A TREND, BUT A NECESSITY FOR HUMAN PROGRESS : WOMEN EMPOWERMENT

Aakriti Sharma
M.A. 2nd Semester

Women Empowerment is misunderstood as women trying to take over from men. Let us be clear : empowerment is about equility, not equality, not superiority. It is the simple, yet profound, idea that women should have the same rights to education, safety, and opportunities as men.

True empowerment comes from three pillars :

- * Education : Educating a girl means educating a family and a generation.
- * Economic Independence : When a woman earns, she gains a seat at the table and has a place in family and social decision.
- * Safety and Respect : A society that cannot respect its women cannot claim to be...
- * Modern society is becoming more aware of women's rights, which has increased the number of NGOs...

कविताएँ

प्रखर शुक्ल
शोधार्थी, हिन्दी विभाग

1. शून्य की आवाज

जब शब्द थक जाते हैं,
तब भीतर एक निस्तब्धता बोलती है—
बिना ध्वनि, बिना भाषा,
फिर भी सबसे स्पष्ट।
मैं सुनता हूँ उसे
जैसे रात सुनती है तारों को—
बिना छुए, बिना समझे,
बस उपस्थित रहकर।
विचार उठते हैं, गिरते हैं,
लहरों की तरह—
पर गहराई...
वह अडिग रहती है।
वहीं कहीं मैं विलीन होने लगता हूँ—
नाम से परे, रूप से परे,
एक ऐसे विस्तार में
जहाँ होना ही प्रार्थना है।
ना पाने की इच्छा,
ना खोने का भय—
बस एक शान्त कम्पन
जो कहता है,
“यही पर्याप्त है।”
और उस क्षण
मैं जानता नहीं—
मैं होता हूँ।
शून्य मुझे भर देता है,
और मैं महसूस कर पाता हूँ—
रिक्त होना ही
पूर्ण होना है।

2. घर में रखा हुआ आसमान

घर में एक कोना है
जहाँ धूप रोज बैठती है
जैसे उसे कहीं जाना नहीं।
मैं वहाँ कुर्सी खिसकाकर बैठा हूँ
तो लगता है
धूप ने मेरे लिए जगह बचाकर रखी थी।
मेज पर रखा गिलास
आधा पानी से भरा है,
आधा किसी इन्तजार से—
शायद प्यास का,
या मेरे सोचने का।
खिड़की से बाहर
पेड़ हिलता है धीरे-धीरे,
जैसे यह हवा को नहीं,
मेरे ध्यान को हिला रहा हो।
इतनी साधारण चीजों के बीच
अचानक लगता है—
मैं भी कोई वस्तु हूँ
जिसे इस कमरे ने
सहेजकर रखा है।
और तब समझ में आता है,
घर सिर्फ दीवारों से नहीं बनता—
वह उन क्षणों से बनता है
जहाँ हम बिना वजह
ठहर जाते हैं।
शायद उसी ठहराव में
एक छोटा सा आसमान रखा है,
जो हर दिन
चुपचाप फैलता रहता है
मेरे भीतर।

मौन

प्रियंका कमल
शोध छात्रा (हिन्दी विभाग)

मौन,
कहाँ खो गई, चेहरों की मुस्कराहट ?
क्यों मौन हो गये, जिन्दगी के पन्ने ?
गाँवों की सूनी पड़ी पगडण्डियाँ,
पगडण्डियों के किनारे खड़े निराश वृक्ष
राह तकते थक हार गये पर,
मुसाफिरों के आने का कोई पैगाम न मिला
सूनी हो गई, वो गाँवों की पगडण्डियाँ
मौन हो गई, वो पेड़ों की खड़खड़ाहट
शायद, इसलिए मौन हो गई जिन्दगी... !

मौन,
कहाँ खो गई, चेहरों की मुस्कराहट ?
क्यों मौन हो गये, जिन्दगी के पन्ने ?
आँगन के मध्य खड़ी वो तुलसी,
वो आँगन में आकर ,
चिड़ियों का चहचहाना
कानों को था लगता मधुर संगीत
अब, नहीं रहा वो आँगन
सूख गई वो तुलसी
मौन हो गया, चिड़ियों का कलरव
शायद, इसलिए मौन हो गई जिन्दगी... !

मौन,
कहाँ खो गई, चेहरों की मुस्कराहट ?

क्यों मौन हो गये, जिन्दगी के पन्ने ?
सावन में बारिशों की हल्की फुहारों में,
पेड़ों की शाख में पड़े झूलों पर,
झूलते लोगों के गीत
वो बच्चों का बारिश में,
कागज की नावों का चलाना
याद दिला जाता था, अपना बचपन
अब, नहीं रही वो कागज की नाव
मौन हो गए, सावन के गीत
शायद, इसलिए मौन हो गई जिन्दगी... !

मौन,
कहाँ खो गई, चेहरों की मुस्कराहट ?
क्यों मौन हो गये, जिन्दगी के पन्ने ?
साँझ होते लगती थी चौपालें,
सुनते थे एक-दूसरों के मत और विचारों को
करती थीं हँसी-ठिठोलियाँ चाची, भाभियाँ
वो इंतजार करते थे, आम की बौरों का
जाते थे सब साथ धानों को रोपने,
लगते थे सब अपने, नहीं था कोई पड़ोसी
अब, खत्म हो गये वे रियते,
मुरझा गई वो आम की बौरें
मौन हो गई, अब वो सब चौपालें
शायद, इसलिए मौन हो गई जिन्दगी... !

मौन,
कहाँ खो गई, चेहरों की मुस्कराहट ?
क्यों मौन हो गये, जिन्दगी के पन्ने ?

नारी के सपनों की उड़ान

महिमा त्रिपाठी
बी०ए० चतुर्थ सेमे०

(क)

मैं एक आवाज हूँ...
कुछ कहना कहना चाहती हूँ...
अपनी बातों को बताना चाहती हूँ...
अपनी बातों को समझाना चाहती हूँ...
मैं एक आवाज हूँ...

(ख)

मैं एक सपना हूँ...
मैं आसमान छूना चाहती हूँ...
मैं कुछ करना चाहती हूँ...
अपने सपनों को पूरा करना चाहती हूँ...
मैं एक सपना हूँ...

(ग)

मैं एक विश्वास हूँ...
मैं उसे उतारना चाहती हूँ...
सबका साहस बनना चाहती हूँ...
सबका विश्वास जीतना चाहती हूँ...
मैं एक विश्वास हूँ...

(घ)

मैं एक नारी हूँ...
मैं सब करना चाहती हूँ...
मैं डरती नहीं, मैं लक्ष्य तक पहुँचना चाहती हूँ...
मैं शक्ति हूँ...
सबका साहस बनना चाहती हूँ...
मैं एक नारी हूँ...

नारी-एक क्रान्ति

आस्था
बी०ए० द्वितीय सेमे०

मैं नारी हूँ...
कमोर नहीं, एक सोच हूँ।
मैं बन्द दरवाजा नहीं,
हर सपने की खुली हुई खिड़की हूँ।
मुझे मत आँकिए मेरे लिबास से,
मेरी ऊँचाई मेरे हौसलों से मापिए।
मैं वो चिन्गारी हूँ,
जो अँधेरो को जलाकर,
रोशनी लिख देती है।
हाँ, मैंने आँसू भी बहाए हैं,
पर हर आँसू ने मुझे और मजबूत बनाया है।
मैं टूटी नहीं,
मैं हर बार और निखर कर उभरी हूँ।
मैं वो आवाज हूँ,
जो अब चुप नहीं रहेगी।
मैं वो कदम हूँ,
जो अब रुकेंगे नहीं।
मैं किताबों में लिखा अध्याय नहीं,
मैं खुद पूरी कहानी हूँ।
मैं किसी की पहचान नहीं,
मैं अपनी खुद की जुबानी हूँ।
जब भी दुनिया ने कहा—
“तुम नहीं कर पाओगी”
मैं मुस्कराकर जवाब दिया—
“देखते जाओ”.....

क्योंकि मैं नारी हूँ-संघर्ष मेरी ताकत है,
सपने मेरी उड़ान हैं,
और आत्मविश्वास मेरी पहचान है।
आज मैं वादा करती हूँ-
मैं डरुंगी नहीं,
मैं झुकुंगी नहीं,
मैं रूकूंगी नहीं।
क्योंकि मैं सिर्फ एक लड़की नहीं...
मैं एक क्रान्ति हूँ।

'अभिव्यक्ति' : सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रम



'उल्लास' : वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता



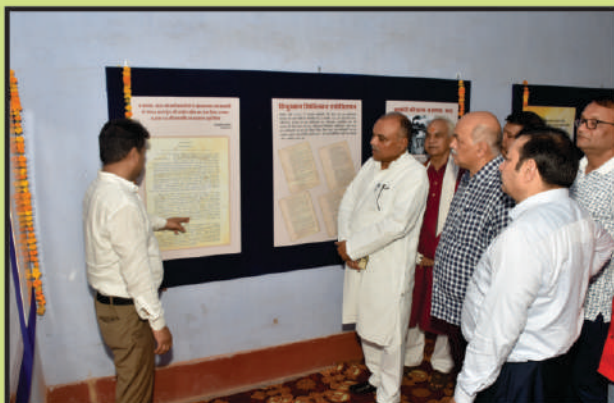
स्वतन्त्रता दिवस / गणतन्त्र दिवस कार्यक्रम



एन०एस०एस० / रोवर्स एण्ड रेन्जर्स



अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद जयन्ती समारोह



माँ

आस्था
बी०ए० द्वितीय सेमे०

माँ सिर्फ एक शब्द नहीं है,
यह पूरा संसार है।
जब मैं गिरा,
तो किसी ने ताली नहीं बजाई,
पर माँ ने मुझे उठाकर कहा-
“तू फिर से कोशिश कर।”
जब मैं हारा,
दूनिया ने कहा- “तुमसे नहीं होगा।”
पर माँ ने कहा-
“मुझे तुम पर भरोसा है।”
उसने अपनी नींदें बेच दी,
ताकि मैं चैन से सो सकूँ।
उसने अपने सपने रोक दिए,
ताकि मैं चैन से सो सकूँ।
माँ की ममता
किसी किताब से नहीं मिलती,
यह तो बस उसके आँचल में मिलती है।
दोस्त बदल सकते हैं,
रिश्ते बदल सकते हैं,
पर माँ का प्यार
कभी नहीं बदलता।
अगर इस दुनिया में सच्चा भगवान है,
तो वह माँ के रूप में ही है।
मैं बस इतना कहना चाहती हूँ-
अगर स्वर्ग कहीं है,
तो वह माँ के चरणों में है।

माँ की ममता (द्वारा डॉ० सुनील जोगी)

संकलनकर्ता : पलक मिश्रा
बी०एस-सी० चतुर्थ सेमे०

जब आँख खुली तो अम्मा की गोदी का एक सहारा था ।
उसका नन्हा-सा आँचल मुझको भूमण्डल से प्यारा था ।
उसके चेहरे की झलक देख चेहरा फूलों-सा खिलता है ।
उसके स्तन की एक बूँद से मुझको जीवन मिलता है ।
हाथों से बालों को नोचा, पैरों से खूब प्रहार किया ।
फिर भी उस माँ ने पुचकारा हमको जी भर के प्यार किया ।
मैं उसका राजा बेटा हूँ, वो आँख का तारा कहती है ।
मैं बड़ूँ बुढ़ापे में उसका बस एक सहारा कहती है ।
ऊँगली को पकड़ चलाया था, पढ़ने विद्यालय भेजा था ।
मेरी नादानी को भी निज अन्तर में सदा सहेजा था ।
मेरे सारे प्रश्नों का वो फौरन जवाब बन जाती थी ।
मेरी राहों के काँटे चुन वो खुद गुलाब बन जाती थी ।
माँ ही है जो खुद भूखी रह करके हमें खिलाती थी ।
हमको सूखा बिस्तर देकर खुद गीले में सो जाती थी ।
माँ ही है जिसने होंठों को भाषा सिखलाई थी ।
मेरी नींदों के लिए रात भर उसने लोरी गाई थी ।
माँ ही है जिसने हर गलती पर डाँटा-समझाया था ।
बच जाऊँ बुरी नजर से काला टीका सदा लगाया था ।
माँ की ममता देख मौत भी आगे से हट जाती है ।
गर माँ अपमानित होती, धरती की छाती फट जाती है ।
घर को पूरा जीवन देकर बेचारी माँ क्या पाती है ?
रूखा-सूखा खा लेती है, पानी पीकर सो जाती है ।
जो माँ जैसी देवी घर के मन्दिर में नहीं रख सकते हैं ।
वो लाखों पुण्य भले कर लें, इन्सान नहीं बन सकते हैं ।

माँ जिसको भी जल दे दे, वो पौधा सन्दल बन जाता है।
माँ के चरणों को छूकर पानी गंगाजल बन जाता है।
माँ के आँचल ने युगों-युगों से भगवानों को पाला है।
माँ के चरणों में जन्म है, गिरिजाघर और शिवाला है।
हिमगिरि जैसी ऊँचाई है, सागर जैसी गहराई है।
दुनिया में जितनी खुशबू है, माँ के आँचल से आई है।
माँ कबिरा की साखी जैसी, माँ तुलसी की चौपाई है।
मीराबाई की पदावली, खुसरो की अमर रुबाई है।
माँ आँगन की तुलसी जैसी पावन बरगद की छाया है।
माँ वेद ऋचाओं की गरिमा, माँ महाकाव्य की काया है।
माँ मानसरोवर ममता का, माँ गोमुख की ऊँचाई है।
माँ परिवारों का संगम है, माँ रिश्तों की गहराई है।
माँ हरी दूब है धरती की, माँ केसर वाली क्यारी है।
माँ की उपमा केवल माँ है, माँ हर घर की फुलवारी है।
सातों सुर नर्तन करते, जब कोई माँ लोरी गाती है।
माँ जिस रोटी को छू लेती है, वो प्रसाद बन जाती है।
माँ हँसती है तो धरती का जर्ज-जर्ज मुसकाता है।
देखो तो दूर क्षितिज अम्बर धरती को शीश झुकाता है।
माना मेरे घर की दीवारों में चन्दा-सी मूरत है।
पर मेरे मन के मन्दिर में बस केवल माँ की मूरत है।
माँ सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, अनुसुइया, मरियम, सीता है।
माँ पावनता में रामचरितमानस, भगवद्गीता है।
अम्मा तेरी हर बात मुझे वरदान से बढ़कर लगती है।
हे माँ तेरी सूरत मुझको भगवान से बढ़कर लगती है।
सारे तीरथ के पुण्य जहाँ, मैं उन चरणों में लेटा हूँ।
जिनके कोई सन्तान नहीं, मैं उन माँओं का बेटा हूँ।
हर घर में माँ की पूजा हो ऐसा संकल्प उठाता हूँ।
मैं दुनिया की हर माँ के चरणों में ये शीश झुकाता हूँ।

मेरे पापा

अमिता मिश्रा
बी०ए० द्वितीय सेमे०

वो ज्यादा बोलते नहीं,
पर हर बात समझ जाते हैं,
अपने सपनों को चुपचाप
मेरे नाम कर जाते हैं।
धूप कितनी भी तेज हो,
वो छाँव बनकर खड़े रहते हैं,
थक जाते हैं खुद मगर
मुझे कभी थकने नहीं देते हैं।
उनकी हथेलियों की लकीरों में
मेरी तकदीर बसती है,
उनकी मेहनत की हर बूँद में
मेरी खुशियों की हस्ती है।
जब मैं गिरती हूँ,
वो डाँट कर उठाते हैं,
पर उनकी आँखों में छुपे डर को
बस वो ही जान पाते हैं।
माँ ममता है तो
पापा विश्वास हैं,
मेरे हर मुश्किल रास्ते का
वो सबसे मजबूत साथ हैं।
कभी नहीं कहते—
“मैं तुमसे प्यार करता हूँ”,
पर उनकी हर चिन्ता में
बस मेरा ही नाम होता है।
अगर भगवान सच में कहीं है,
तो मैंने उसे देखा है—
मेरे पापा के रूप में,
जो हर दिन चुपचाप मेरे लिए जीते हैं।

समय की पुकार

अमिका दीक्षित
बी०ए० द्वितीय सेमे०

समय की धारा बहती जाती,
न रुकती है, न थम पाती।
जो इसकी कीमत पहचान ले,
किस्मत उसकी चमक उठ जाती।
क्षण-क्षण में छुपा सन्देश है,
जीवन का ये उपदेश है।
जो पल बीता लौटे न कभी,
यही समय का परिवेश है।
आज का अवसर खो मत देना,
कल पर कुछ भी छोड़ मत देना।
छोटी मेहनत बीज है सफलता का,
इसे यूँ ही तोड़ मत देना।
घड़ी की टिक-टिक कहती हर बार,
समय है जीवन का आधार।
जो हर पल का मान है करता,
खुलते उसके सफलता द्वार।
आलस में जो समय गँवाते,
खाली हाथ ही रह जाते।
मेहनत से जो समय सजाते,
वही इतिहास रच जाते।
समय परीक्षा भी लेता है,
समय ही साहस देता है।
संघर्ष की अग्नि में तपकर,
इन्सान को कुन्दन करता है।
मत बहाओ इसे व्यर्थ यूँ ही,
हर पल अमूल्य रत्न समान।
समय से बढ़कर कुछ भी नहीं,
यही जीवन की सच्ची पहचान।

कविताएँ

हिमानी कमल
बी०एस-सी० द्वितीय सेमे०

1. वो चटक लाल रंग

वो झिलमिल-झिलमिल दोपहरों में,
यूँ घूम रही वो शहरों में।
मन भी चंचल, तन में हलचल
सुन्दरता, स्फूर्ति की मूरत
थकान की थी उसे नहीं जरूरत।
उँगली पकड़े माँ के साथ
चली जा रही थी, गुब्बारे हाथ।
अन्जान थी वो कि है
उसकी उमंग का आखिरी दिवस,
इसके बाद खत्म हो जायेगा
उसके ऊपर बचपन का वश।
सहसा माँ ने उसके कपड़ों की ओर देखा,
झट से उसे अपनी ओर खींचा
और फिर उसे अपने पल्लू से लपेटा।
बचपन रूपी वृक्ष से एक और टूटी थी पत्ती,
एक मासूम सी बच्ची बनने जा रही थी युवती।
आज उसकी सफेद स्कर्ट लाल रंग में आई थी,
वो छोटी सी गुड़िया पहली बार पेट-दर्द से कराही थी।
चलने में वो खुद को सँभालती,
कपड़ों को थी बार-बार सँवारती,
समझ न आने पर
वो जाने लगी अपने आराध्य के पास
पर याद आया माँ ने मना किया है,
करने को श्रीकृष्ण की पूजा-आरती का उपवास।
नन्हीं बिटिया माँ से कहती है,
ये कैसा रोग है जैसे इसने मेरी आधी जान ली हो,

पेट में खन्जर
और मेरे रक्त ने जैसे मुझसे दुश्मनी कर ली हो।
इसके खत्म होने में कितने दिन लगेंगे
या लग जायेंगे वर्ष,
माँ ने कहा यही तो है बिटिया!
महिलाओं का संघर्ष।
इसने हमारी खुशियों को कर दिया है
अपनी कटार से बंग
ये है;
वो चटक लाल रंग ॥

2. मुझे वापस चाहिए मेरा बचपन.....

भोर होते ही माँ की आवाज कानों में कुछ इस तरह गूँज जाती थी,
गहरी-से-गहरी नींद पल में टूट जाती थी।
सच में, तब मुझे गुस्सा तो बहुत आती
पर पता नहीं कैसे, मैं अपने स्कूल बिल्कुल टाइम पर पहुँच जाती।
उस समय टीचर की डाँट और होमवर्क को अक्सर भूल जाते,
और वापस घर अपने सूजे हुए गाल ले के जाते।
न खाने की चिन्ता, न डाँट का डर
पूरा दिन खेलते थे हम एक-दूसरे के साथ घर-घर।
जो कहो उस समय लगता था सब जगह अपनापन,
मुझे वापस चाहिए मेरा बचपन।
परेशानियाँ तब भी थीं पर
हम अपनी धुन में रहते थे गुन,
तभी इस समय ने समझदारी और जिम्मेदारी की सजा के लिए मुझे लिया चुन।
पहले तो हम सब भाई-बहन एक टॉफी के लिए लड़ जाते थे,
और आज सब साथ बैठकर एक चाय तक नहीं पी पाते हैं।
आज बस चारों तरफ मुझे दिखता है अकेलापन,
न प्यार, न दोस्ती, न लड़कपन,
मुझे वापस चाहिए मेरा बचपन..... ॥

भारत में कठपुतली कला : एक वैश्विक परिदृश्य में

डॉ० मनीष तिवारी
समाजशास्त्र विभाग

कठपुतली रंगमंच में पेंटिंग, मूर्तिकला, नृत्य-संगीत तथा अभिनय के द्वारा नाटक प्रस्तुत किया जाता है। पुतली कला की खोज, मानव जाति के लिए एक उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण आविष्कारों में से एक है। प्राचीन हिन्दू दार्शनिक पुतलकारों का बहुत ही सम्मान करते थे। वे पुतलकारों को सर्वशक्तिमान विधाता और पूरे ब्रह्माण्ड की एक पुतलमन्त्र मानते थे। महान ग्रन्थ श्रीमद्भागवत्, भगवान श्रीकृष्ण के बालरूप की “नहद कथा” के अनुसार भगवान धागों “सत्, तम और रज” प्रत्येक से पूरे विश्व को कठपुतली की भांति चलाते हैं।

संस्कृत शब्दावली में पुतलीका और पुट्टीका का अर्थ “छोटे पुत्रों” से है। पुतली शब्द लैटिन भाषा के “प्यूपा” से लिया गया है, जिसका अर्थ है पुतली। भारत को “पुतलियों का घर” कहा जाता है। पुतली कथा की प्राचीनता के सम्बन्ध में प्रथम एवं द्वितीय सदी ईसा पूर्व में लिखे गये तमिल ग्रन्थ “शिलप्पादिकारम्” में पाये जाते हैं।

भारत में लगभग सभी प्रकार की पुतलियाँ पायी जाती हैं तथा पारम्परिक मनोरंजन में सदियों से पुतली कला का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। पारम्परिक नाटक की भांति ही पुतली नाट्य महाकाव्यों और दन्त कथाओं पर आधारित होते हैं तथा देश के विभिन्न प्रान्तों की पुतलियों की अपनी एक खास पहचान होती है। उनमें चित्रकला और मूर्तिकला की क्षेत्रीय शैली झलकती है-

कठपुतली	-	राजस्थान
कुनदेई, रावण छाया	-	ओडिसा
गोम्बेयट्टा	-	कर्नाटक
बोम्मालट्टम्	-	तमिलनाडु
पुत्तलनाच	-	पश्चिम बंगाल
यमपुरी	-	बिहार
पावाकूथू	-	केरल

भारत में परम्परागत पुतली नाटकों की कथावस्तु पौराणिक साहित्य, दन्तकथाओं और किंवदन्तियों से ली जाती रही है। उनमें चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य और नाटक आदि की रचनात्मक समावेश होता रहा है। शारीरिक एवं मानसिक रूप से अक्षम बच्चों को अपने शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए प्रेरित करने में कठपुतली कला का सफल प्रयोग किया जा रहा है। अपनी प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा करने सम्बन्धी कार्यक्रम काफी सहायताप्रद रहे हैं। पुतलियों के निर्माण तथा उनके माध्यम से सम्प्रेषण करने में जो सौन्दर्य आनन्द मिलता है, वह बच्चों में बहुमुखी व्यक्तित्व विकास में सहायक होता है।

वर्तमान समय में कठपुतली कला का वैश्विक संस्करण “कार्टून” चैनल है। कार्टून चैनल एवं “कम्प्यूटर ग्राफिक्स एनीमेशन” से सृजित “मिक्की माउस” को कौन भूल सकता है। बच्चों के अधिगम को अधिक सुग्राही एवं बोधगम्य बनाने में कार्टून चैनलों का अधिक प्रभाव रहा है। “मोगली”, “छोटा भीम”, “डोरेमान” आदि अनेक काल्पनिक कार्टून पात्र बच्चों की स्वप्निल दुनिया का सृजन करते हैं।

कार्टून पात्र कुछ और नहीं कठपुतली कला का दृश्य-श्रव्य इलेक्ट्रानिक संसार है, जिसमें अधिक व्यापकता तथा मनोरंजन है। अमेरिका का “डिज्नीवर्ल्ड” कठपुतली पात्रों का वैश्विक सेतु है, जो सम्पूर्ण विश्व को शैक्षिक, सांस्कृतिक, भाषागत सरलता प्रदान करता है।

आज के आधुनिक समय में सारे विश्व के शिक्षाविदों ने संचार माध्यम में पुतलियों की उपयोगिता के महत्व को अनुभव किया है। भारत में आज अनेक व्यक्ति तथा संस्थाएँ शैक्षणिक संकल्पनाओं के संप्रेषण में कठपुतलियों के प्रयोग करने में छात्रों एवं अध्यापकों को समायोजित कर रही हैं।

मानव जीवन में औषधीय पौधों का महत्व

डॉ० दिव्या भदौरिया
वनस्पति विज्ञान विभाग

मानव जीवन और पृथ्वी के अस्तित्व के लिए पौधों का महत्व अतुलनीय है। पौधे पृथ्वी पर प्राथमिक उत्पादक (Primary Producers) हैं। वनस्पति विज्ञान (Botany), जीव विज्ञान की वह शाखा है, जो पौधों के जीवन, उनकी संरचना, विकास और पर्यावरण के साथ उनके सम्बन्धों का अध्ययन करती है। पृथ्वी में जीवन पौधों पर ही निर्भर है। पौधे प्रकाश संश्लेषण (Photosynthesis) की प्रक्रिया के माध्यम से ऑक्सीजन छोड़ते हैं और कार्बन डाइऑक्साइड सोखते हैं। पौधे वायुमण्डल से अतिरिक्त कार्बन डाइऑक्साइड को हटाकर तापमान को नियन्त्रित करने में मदद करते हैं, जिससे ग्लोबल वार्मिंग से बचाव होता है। वनस्पति विज्ञान हमें पारिस्थितिकी तन्त्र (ईकोसिस्टम) को समझने में भी मदद करता है। ठीक इसी प्रकार पौधों का औषधीय महत्व (Medicinal Importance) प्राचीनकाल से ही मानव सभ्यता का आधार रहा है। हजारों वर्षों से पौधों का उपयोग बीमारियों के इलाज के लिए किया जा रहा है। आधुनिक चिकित्सा में भी पौधों का बहुत बड़ा योगदान है। आज भी दुनिया की लगभग 80% आबादी प्राथमिक स्वास्थ्य के लिए पौधों पर निर्भर है।

चिकित्सा की दुनिया (Medicinal World) में पौधों की बड़ी भूमिका है। आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा पद्धतियों में मूलरूप से पौधों का ही उपयोग करके जटिल बीमारियों का इलाज किया जाता है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति में भी पौधों की भूमिका केवल जड़ी-बूटियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह फार्मास्यूटिकल उद्योगों की नींव भी है।

चिकित्सा जगत में पौधों के औषधीय महत्व के प्रमुख पहलुओं का विवरण निम्नलिखित है-

1. प्राकृतिक चिकित्सा का स्रोत

पौधों में फाइटोकेमिकल्स (Photochemicals) होते हैं, जो प्राकृतिक रूप से बीमारियों से लड़ने में मदद करते हैं।

तुलसी-

इसे “दवाओं की रानी” कहा जाता है। यह सर्दी, खांसी और तनाव को कम करने में अत्यधिक प्रभावी है।

नीम-

अपने एंटी-बैक्टीरियल और एंटी फंगल गुणों के कारण इसे “गाँव का औषधालय” कहा जाता है। यह त्वचा रोगों और रक्त शोधन (Blood Purification) के लिए रामबाण है।

2. आधुनिक दवाओं के कच्चे माल के रूप में (Primary Source of Drugs)

आज की एलोपैथिक दवाएँ भी पौधों के अर्क से ही विकसित की गई हैं। दुनिया की लगभग 25% प्रिस्क्रिप्शन दवाएँ सीधे तौर पर पौधों से प्राप्त होती हैं। वैज्ञानिक पौधों से सक्रिय तत्वों (Active Ingredients) को अलग करते हैं और उनसे दवाएँ बनाते हैं।

एस्पिरिन (Aspirin) : यह दर्द निवारक दवा मूलरूप से 'विलो' (Willow) पेड़ की छाल से प्रेरित है।

मार्फिन (Morphine) : अफीम के पौधे (Poppy) से प्राप्त होती है, जिसका उपयोग तीव्र दर्द के प्रबन्धन में किया जाता है।

डिगोक्सिन (Digoxin) : 'फॉक्सग्लोव' (Foxglove) के पौधे से प्राप्त यह औषधि हृदय रोगों के इलाज में उपयोग की जाती है।

3. कैंसर के उपचार में महत्वपूर्ण योगदान-

पौधों ने घातक बीमारियों जैसे कैंसर के इलाज में क्रान्तिकारी भूमिका निभाई है:

विन्क्रिस्टीन (Vincristine) : सदाबहार (*Catharanthus roseus*) के पौधे से प्राप्त होता है, जिसका उपयोग ल्यूकेमिया (ब्लड कैंसर) के इलाज में होता है।

टैक्सोल (Taxol) : 'यू' (Yew) वृक्ष की छाल से प्राप्त यह रसायन स्तन और फेफड़ों के कैंसर के इलाज में जीवन रक्षक है।

4. एण्टीबायोटिक और एण्टी मलेरिया दवाओं का स्रोत-

पौधे सूक्ष्मजीवों (Bacteria & Virus) से लड़ने की प्राकृतिक क्षमता रखते हैं:

आर्टेमिसिनिन (Artemisinin) : 'स्वीट वॉर्डवुड' पौधे से प्राप्त यह औषधि आज मलेरिया के खिलाफ सबसे प्रभावी हथियार है।

क्विनिन (Quinine) : सिनकोना पेड़ की छाल से प्राप्त, जिसने सदियों तक मलेरिया से करोड़ों लोगों की जान बचाई है।

5. दीर्घकालिक रोगों का उपचार-

आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा पद्धतियों में पौधों का उपयोग करके जटिल बीमारियों का इलाज किया जाता है।

अश्वगन्धा : मानसिक स्वास्थ्य, याददाश्त बढ़ाने और इम्यूनिटी को मजबूत करने के लिए उपयोग किया जाता है।

गिलोय : डेंगू और मलेरिया जैसे बुखार में प्लेटलेट्स बढ़ाने और रोग प्रतिरोधक क्षमता सुधारने में मदद करता है।

हल्दी : इसमें 'करक्यूमिन' होता है, जो सूजनरोधी (Anti-inflammatory) और कैंसररोधी गुणों से भरपूर है।

6. एथनोबोटनी (Ethnobotany) और पारम्परिक ज्ञान-

चिकित्सा जगत में पौधों की भूमिका हमारे पूर्वजों के ज्ञान पर टिकी है।

आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा : ये पद्धतियाँ पूरी तरह से पौधों के गुणों पर आधारित हैं।

बायोप्रोस्पेक्टिंग : आधुनिक वैज्ञानिक आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों के औषधीय ज्ञान का अध्ययन करके नई दवाओं की खोज कर रहे हैं।

7. आर्थिक और सुरक्षित विकल्प-

सिंथेटिक दवाओं की तुलना में पौधों से बनी औषधियों के दुष्प्रभाव (Side effects) आमतौर पर कम होते हैं। साथ ही, यह ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं के लिए एक किफायती विकल्प प्रदान करते हैं।

प्रमुख औषधीय पौधे और उनके उपयोग-

पौधा	औषधीय उपयोग
एलोवेरा	त्वचा की जलन, पाचन और बालों के स्वास्थ्य के लिए।
सर्पगन्धा	उच्च रक्तचाप (High Blood Pressure) को नियन्त्रित करने के लिए।
सिंकोना	इसकी छाल से मलेरिया की दवा 'कुनैन' बनाई जाती है।
ब्राह्मी	मस्तिष्क की शक्ति और एकाग्रता बढ़ाने के लिए।
आंवला	विटामिन C का स्रोत, पाचन और आँखों के लिए गुणकारी।

विज्ञान की दृष्टि से प्रमुख औषधीय पौधे-

सामान्य नाम	वैज्ञानिक नाम (Scientific Name)	मुख्य रासायनिक घटक	औषधीय गुण
तुलसी	<i>Ocimum sanctum</i>	Eugenol (यूजेनॉल)	तनाव कम करना, एंटी-सेप्टिक।
नीम	<i>Azadirachta indica</i>	Azadirachtin (अजाडिराक्टिन)	कीटनाशक, त्वचा रोग निवारक।
हल्दी	<i>Curcuma longa</i>	Curcumin (करक्यूमिन)	सूजन-रोधी, कैंसर-रोधी।
अश्वगन्धा	<i>Withania somnifera</i>	Withanolides (विथानोलाइड्स)	शक्तिवर्धक, चिन्ता कम करना।
एलोवेरा	<i>Aloe barbadensis</i>	Aloin & Glucomannan	पाचन एवं त्वचा की मरम्मत।
सर्पगन्धा	<i>Rauvolfiaserpentina</i>	Reserpine (रिसर्पाइन)	हाई ब्लड प्रेशर और पागलपन का इलाज।

8. रासायनिक घटकों का महत्व (Chemical Significance)-

पौधों में मौजूद ये रसायन (Alkaloids, Glycosides, Terpenoids) शरीर के विभिन्न अंगों पर सीधा प्रभाव डालते हैं।

Alkaloids (एल्कोलॉइड्स) : जैसे कि सर्पगन्धा में पाया जाने वाला Reserpine। यह सीधे तंत्रिका तंत्र (Nervous System) पर काम करता है।

Glycosides (ग्लाइकोसाइड्स) : ये मुख्य रूप से हृदय की कार्यप्रणाली को सुधारने के लिए उपयोग किए जाते हैं। (जैसे Digitalis का पौधा)।

Essential Oils : तुलसी और पुदीने में पाए जाने वाले तेल श्वसन सम्बन्धी समस्याओं में राहत देते हैं।

9. आधुनिक चिकित्सा (Pharma) में इनका उपयोग-

आजकल वैज्ञानिक इन पौधों से मुख्य रसायनों को अलग करते हैं और उनसे लैब में Capsules या Syrups तैयार करते हैं। उदाहरण के लिए, सिनकोना के पेड़ से निकाली गई Quinine आज भी मलेरिया की सबसे प्रभावी दवाओं में से एक है।

10. भविष्य की चिकित्सा : बायो-फार्मिंग (Biopharming)-

अब वैज्ञानिक पौधों की जैविक खेती, एक ऐसी कृषि पद्धति जो रसायनों के बिना, केवल प्राकृतिक संसाधनों जैसे कम्पोस्ट, हरी खाद, केचुआ खाद, और जैव उर्वरकों का उपयोग करके फसल पैदा करती है, कर रहे हैं। जेनेटिक इंजीनियरिंग के माध्यम से पौधों (जैसे तम्बाकू या मक्का) का उपयोग वैक्सीन (Vaccines) और मानव प्रोटीन बनाने के लिए किया जा रहा है।

एक रोचक तथ्य :

क्या आप जानते हैं कि कॉफी में पाया जाने वाला कैफीन असल में पौधे का एक 'रक्षा तन्त्र' है, जो कीड़ों को दूर रखता है, लेकिन इन्सानों के लिए यह एक उत्तेजक औषधि (Stimulant) का काम करता है।

मानव संसाधन विकास के लिए शिक्षा की अवधारणा

डॉ० अर्चना सक्सेना
शिक्षाशास्त्र विभाग

मानव संसाधन दो शब्दों से मिलकर बना है- मानव+संसाधन, यदि हम इसका विश्लेषण करें तो पायेंगे कि मानव चेतन का प्रतिनिधित्व करता है जबकि संसाधन जड़ का। दो विपरीत अर्थों का प्रतिनिधित्व करता, यह शब्द नवीन प्रवृत्ति का परिचायक है। यह प्रकृति है चेतन मनुष्य की शक्ति का जड़ संसाधन की भांति प्रयोग। वर्तमान समय में मनुष्य को उत्पादन के अन्य साधनों की तरह उत्पादन का एक साधन माना जाने लगा है। शिक्षा द्वारा मानव की क्षमता का विकास होता है। जैसे धन एक पूँजी है, साधन है, उसी प्रकार मानव भी आज एक पूँजी है, साधन है, संसाधन है। भारत में मानव संसाधन विकास मन्त्रालय शिक्षा के विभिन्न अंगों को देखता है। शिक्षा यदि आज मानव संसाधन का विकास नहीं करती तो उसकी सार्थकता पर प्रश्नचिन्ह लग सकता है। प्राचीन समय में बालक के चारित्रिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए शिक्षा देने की परम्परा थी। शिक्षा को अनुत्पादक क्रिया माना जाता था।

भारत की जनसंख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। जनसंख्या की दृष्टि से भारत का दूसरा स्थान है तथा ऐसा अनुमान है कि 2050 तक भारत विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश बन जायेगा। भारत की विशाल जनसंख्या अनेक समस्याओं को जन्म दे रही है। वैसे भारत में प्राकृतिक संसाधनों की कोई कमी नहीं है। कोयला, माइका आदि खनिज पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। लौह अयस्क के क्षेत्र में भारत विश्व में अग्रणी है। कृषि क्षेत्र में भारत का प्रमुख स्थान है। गेहूं, चावल, चीनी, चाय, जूट, सूत, तम्बाकू, तिलहन, रबर आदि सब तरह के प्राकृतिक संसाधन भारत में प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। लेकिन फिर भी भारत विकसित देशों की श्रेणी में नहीं पहुँच पाया है। इस समस्या के समाधान के लिए भारत की विशाल जनसंख्या को मानव संसाधन में बदलना होगा।

यदि जनसंख्या किसी उत्पादक कार्य में लग जाये तो बोझ नहीं सम्पत्ति बन जायेगी। देश का आर्थिक विकास होगा जनता का जीवन स्तर सुधरेगा, गरीबी व बेकारी जैसी समस्याएँ दूर होंगी।

वर्तमान समय में अनेक अर्थशास्त्रियों एवं शिक्षाशास्त्रियों ने यह मत व्यक्त किया है कि शिक्षा एक उत्पादन क्रिया है। पहले शिक्षा को अनुत्पादक क्रिया माना जाता था, किन्तु अब शिक्षा को एक उत्पादक क्रिया माना जाने लगा।

किन्तु शिक्षा अन्य उत्पादक क्रियाओं से कुछ भिन्न है। यह उत्पादन को बढ़ाती है, स्वयं उत्पादन नहीं करती। उत्पादन के साथ-साथ उपभोग की भी वस्तु है। शिक्षा वस्तुओं में परिवर्तन नहीं लाती वरन् मनुष्यों में सुधार करती है। अतः इसका लाभ परोक्ष रूप से मिलता है। कुशल मानव शक्ति के सृजन द्वारा यह देश में उत्पादन की वृद्धि को सम्भव बनाती है। यह कार्य वस्तुओं के उत्पादन से भी कठिन है। ऐसा देखा गया है कि किसी उद्योग में जो पूँजी लगाई जाती है, उससे अधिक पूँजी भविष्य में वापस मिल जाती है। शिक्षा में जो पैसा लगाया जाता है जैसे विद्यालय भवन बनाने में, शिक्षकों के वेतन में, फर्नीचर व अन्य शिक्षा के उपकरणों में तथा परीक्षा कराने में जो पैसा लगाया जाता है, उससे व्यक्ति की योग्यता बढ़ती है और

उद्योगों के लिए कुशल श्रमिक प्राप्त होते हैं। कुशल श्रमिकों के द्वारा देश का आर्थिक विकास होता है और शिक्षा पर लगाई पूँजी परोक्ष रूप से बढ़ कर देश को प्राप्त हो जाती है। इसी अर्थ में शिक्षा को विनियोग कहा जाता है।

शिक्षा में जितनी पूँजी लगाई जायेगी, देश उतना ही विकास करेगा। शिक्षा निर्धनता दूर करने के लिए भी आवश्यक है। निर्धन राष्ट्रों में धनी राष्ट्रों की अपेक्षा कम शिक्षित लोग पाये जाते हैं। किसी भी व्यवसाय को शिक्षित लोग अच्छे ढंग से चला सकते हैं तथा शिक्षित लोगों के कार्य करने के ढंग में अन्तर होता है। शिक्षित व्यक्ति को व्यवसाय चयन में सुविधा होती है। ये सभी बातें शिक्षा के विनियोगी पक्ष को प्रकट करती हैं।

यदि शिक्षा को विनियोग माना जाए तो इससे होने वाले प्रतिफल की जानकारी भी हमें होनी चाहिए। शिक्षा के प्रतिफल चार प्रकार के होते हैं- 1. मुद्रा के रूप में प्रतिफल 2. मुद्रा रहित प्रतिफल 3. व्यक्तिगत प्रतिफल 4. सामाजिक प्रतिफल।

शिक्षा के प्रतिफल को ठीक प्रकार से मापा नहीं जा सकता है। शिक्षा के प्रतिफल तात्कालिक नहीं होते हैं, ये बहुत समय बाद में प्राप्त होते हैं। शिक्षा द्वारा प्राप्त प्रतिफल गुणात्मक होता है। अतः इसे संख्या में बाँधना कठिन होता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षा के द्वारा ही मानव संसाधन का विकास होता है। शिक्षा देश के सामाजिक-आर्थिक ताने-बाने में सन्तुलन के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत के नागरिक इसके बहुमूल्य संसाधन हैं, इसलिए नागरिकों के समग्र विकास के लिए बुनियादी शिक्षा के रूप में पोषण और देखभाल की जरूरत है।

FLEETING THREADS OF LIFE

Dr. Khushboo Singh
Assistant Professor, English

Life is fleeting, a moment's breath
Gives us time to chase our death
Moments last, memories remain
Echoes of joy, tears and pain.

We weave our days in threads of time
Some woven tight, some left behind
The clock ticks on, the hours fade
Leaving dreams that we have yet to make

In fleeting life, we search for more
Legacy, a love to hold.
But true beauty lies in each breath
In the dream, life's fragile thread.

मेक इन इण्डिया

भावना गुप्ता
अर्थशास्त्र विभाग

भारत के वर्तमान प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने देश के विकास और लोगों को लाभ पहुँचाने के लिए बहुत सारी योजनायें लॉन्च की हैं, जिनमें से उन्होंने मेक इन इण्डिया की भी नींव रखी। प्रधानमन्त्री मोदी ने इस योजना की शुरुआत 25 सितम्बर 2014 को दिल्ली के विज्ञान भवन में की। मेक इन इण्डिया का मुख्य उद्देश्य विदेशी निवेश को अपने देश में ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देना साथ ही भारत में नागरिकों को रोजगार के बेहतरीन अवसर प्रदान करना है ताकि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देश की अलग पहचान बन सके। मेक इन इण्डिया के तहत घरेलू विनिर्माण उद्योग को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखा गया है।

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, जहाँ एक तरफ मेक इन इण्डिया यहाँ लोगों को फायदा पहुँचाने वाली साबित हो रही है, वहीं दूसरी ओर मेक इन इण्डिया से कई क्षेत्रों पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ रहा है। इससे जहाँ औद्योगिक क्षेत्र को बढ़ावा मिल रहा है, वहीं दूसरी तरफ कृषि क्षेत्र को उपेक्षित किया जा रहा है। बड़ी कम्पनियों का विस्तार होने से प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन हो रहा है क्योंकि ज्यादातर कारखाने प्राकृतिक संसाधनों का ज्यादा उपयोग करते हैं, इसलिए ऐसे संसाधन विलुप्त होते जा रहे हैं।

किन्तु मेक इन इण्डिया के तहत कई सकारात्मक प्रभाव भी सामने आ रहे हैं। विदेशी निवेश को प्रोत्साहन मिल रहा है। युवाओं को अधिक रोजगार मिल रहा है। मेक इन इण्डिया अभियान के अन्तर्गत जब वस्तुएँ हमारे देश में बनेंगी तो सस्ती भी होंगी। उन वस्तुओं का निर्यात कर सकेंगे। तभी देश आत्मनिर्भर बनेगा और विकसित भारत का सपना साकार हो सकेगा।

जनांकिक लाभ का सदुपयोग और कौशल युक्त भारत

दिनेश कुमार
असि० प्रो०, अर्थशास्त्र विभाग

भारत जनांकिक परिवर्तन के दौर से आगे बढ़ रहा है, जिसके कारण 29 वर्ष की औसत आयु के साथ भारत विश्व का सबसे युवा आबादी वाला राष्ट्र बन गया है। इससे भारत की तीव्र गति से बढ़ती अर्थव्यवस्था के लिए ही नहीं बल्कि पश्चिमी देशों की बूढ़ी होती अर्थव्यवस्थाओं के लिए भी कुशल कार्यबल उपलब्ध कराने का अनूठा अवसर मिला है। 2016-17 की आर्थिक समीक्षा के अनुसार 1950 के बाद पहली बार विकसित देशों की कामकाजी आयु (15-59 वर्ष) वाली कुल आबादी कम हो गई क्योंकि चीन और रूस की कामकाजी उम्र वाली आबादी में 20-20 प्रतिशत की कमी आई है। दूसरी ओर भारत में अभी करीब 28% जनसंख्या युवा वर्ग में आता है और उसमें कामकाजी जनसंख्या बढ़ रही है, जो 2040 तक अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुँच सकती है। जनांकिक के मामले में यदि भारत के राज्यों की बात किया जाए तो बहुत बड़ी असमानता दिखाई देती है, प्रायद्वीपीय भारत में पश्चिम बंगाल, केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु और आन्ध्रप्रदेश तथा भारत के भीतरी प्रदेश, जिसमें मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और बिहार के बीच बहुत बड़ी असमानता दिखाई देती है। यदि बात किया जाए प्रायद्वीपीय राज्यों में विकसित देशों जैसे परिदृश्य दिखाई देते हैं, लेकिन भीतरी राज्यों में अपेक्षाकृत युवा एवं गतिशील है, जिसमें कामकाजी उम्र वाली जनसंख्या बढ़ रही है लेकिन इस जनांकिक सम्भावनाओं के लाभ उठाने के लिए युवा श्रम बल को रोजगार प्राप्त करने योग्य कौशल एवं ज्ञान देने की जरूरत है, जिससे अर्थव्यवस्था की उत्पादकता एवं प्रतिस्पर्धा क्षमता बढ़ सके।

व्हीबॉक्स द्वारा जारी इण्डिया स्किल रिपोर्ट 2018 बताती है कि उच्च शिक्षा संसाधनों से निकल रहे केवल 46% युवा रोजगार पाने लायक है। इससे कौशल की कमी, कौशल में बेमेल की समस्या आती है, जिससे उद्योग कुशल श्रम बल की कमी की शिकायत कर रहे हैं, और बड़ी संख्या में शिक्षित युवा उचित रोजगार नहीं मिलने की शिकायत भी कर रहे हैं। तीव्र गति से बढ़ती हुई भारतीय अर्थव्यवस्था को अपने युवाओं की आकांक्षा इस तरह से पूरी करने की जरूरत है, जिससे देश एवं विदेश में अर्थव्यवस्था की श्रम बल सम्बन्धी जरूरतें भी पूरी हो सके और इसके लिए कौशल की मांग और आपूर्ति को मापना अत्यन्त आवश्यक है। कौशल की कमी पर एन०एस०डी०सी० द्वारा कराए गए एक अध्ययन में मालूम हुआ कि अर्थव्यवस्था के 24 प्रमुख क्षेत्र में 2022 तक 10.973 करोड़ कुशल मानव की जरूरत होगी। इसके लिए कौशल विकास योजना अभिन्न घटक बन जाता है और रोजगार प्राप्त करने की योग्यता एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए आर्थिक वृद्धि की रणनीतियाँ बनाना आवश्यक हो जाता है, कौशल की रणनीति को सफल बनाने के लिए सभी क्षेत्रों में उद्यमशीलता के अवसर रोजगार के लिए समान अवसर सृजित करना चाहिए जिससे आर्थिक वृद्धि से आजीविका का सृजन हो सके।

मुख्य चुनौतियाँ :

श्रम बाजार की बढ़ती माँग एवं तीव्र आर्थिक वृद्धि की जरूरत के कारण गुणवत्तायुक्त कौशल प्रमुख चुनौती बन

निर्गमिणी- 2026

चुका है। इनमें शिक्षा की गुणवत्ता में कमी वाले शिक्षित युवाओं की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, जिससे खराब शिक्षा पाने वाले युवा बड़ी संख्या में हैं, कुशल कामगारों की अधिक माँग और रोजगार पाने की कम योग्यता, औपचारिक स्कूली शिक्षा बीच में छोड़ने वालों को कौशल प्रदान करते हुए बुनियादी जोड़-घटाना साक्षरता और व्यवहारिक कौशल प्राप्त करने का दूसरा मौका देना, जिससे औपचारिक क्षेत्र में नौकरी तलाश सके। युवाओं की संख्या की तुलना में प्रशिक्षण क्षमताओं का सीमित एवं असमान वितरण है, मूल्यांकन एवं प्रमाणन की कई प्रणालियाँ होना, जिनके कारण परस्पर विरोधी परिणाम प्राप्त होते हैं और नियोक्ता को भ्रम बना रहता है। यह चुनौती इस बात की ओर इशारा करती है कि तीव्र बढ़ती हुई भारतीय अर्थव्यवस्था को युवाओं की आकांक्षाओं की पूर्ति करने और इसके लिए आवश्यक कौशल की माँग और आपूर्ति को घरेलू तथा अन्तर्राष्ट्रीय रोजगार बाजार में पूरा करने की ओर अग्रसर है।

कौशलयुक्त भारत बनाने में सरकार का प्रयास :

सरकार बढ़ते युवा की जनसंख्या को कौशलयुक्त भारत बनाने के लिए अनेक परिवर्तन किया है। इनमें प्रशासन के ढाँचे में बड़े बदलाव किए गए हैं। नवम्बर 2014 में कौशल विकास एवं उद्यमिता मन्त्रालय का गठन किया गया और उसे भारत में कौशल विकास की सभी गतिविधियों का नोडल मन्त्रालय बना दिया गया। प्रशिक्षण महानिदेशालय, एनएसडीसी एवं एनएसडीए जैसी पहले से ही मौजूद कौशल विकास संस्थाओं के अधिकतम उपयोग के इरादे से बुनियादी ढाँचे एवं कार्यक्रमों का एकीकरण पॉलिटैक्निक, जन शिक्षण संस्थान जैसे कई कार्यक्रम भारतीय उद्यमिता संस्थान जैसी संस्थाएँ इस मन्त्रालय को सौंप दी गई हैं।

राष्ट्रीय कौशल विकास नीति 2009 और उद्यमिता पर ध्यान केन्द्रित करते हुए 2015 में नई नीति राष्ट्रीय कौशल विकास एवं उद्यमिता नीति 2015 प्रारम्भ की गई। 2014 में अप्रेन्टिसशिप अधिनियम 1961 को संशोधित किया गया, जिससे उद्योगों की सहभागिता बढ़ सके और अप्रेन्टिसों का दायरा और भी बढ़े। 2015 की राष्ट्रीय कौशल नीति काम करते हुए प्रशिक्षण के महत्व को भी स्वीकार करती है। कौशल विकास तन्त्र की क्षमता बढ़ाने के लिए अनेक कदम उठाये गये हैं। आईटीआई की दीर्घकालीन प्रशिक्षण क्षमता 2014 में 10750 थी, जिसे 2018 तक बढ़ाकर 14276 आईटीआई तक पहुँचा दिया गया है। अल्प अवधि प्रशिक्षण में भी जबरदस्त वृद्धि हुई है और 2013-14 के 3.34 लाख से 2017-18 में प्रधानमन्त्री कौशल विकास योजना के अन्तर्गत 16 लाख तक पहुँच चुका है। प्रधानमन्त्री कौशल विकास योजना केन्द्र विभिन्न राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में फैले हैं तथा प्रत्येक जिले में प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध कराने के प्रयास किए जा रहे हैं।

भारतीय कामगारों की गतिशीलता सुनिश्चित करने के लिए 460 जिलों में प्रधानमन्त्री कौशल केन्द्र के रूप में बहु कौशल संस्था स्थापित किए गए हैं। इसके अलावा दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना, राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन, एकीकृत कौशल विकास योजना जैसे कार्यक्रम भी ग्रामीण एवं शहरी युवाओं को सामान्य व्यवसाय में कौशल प्रदान करने की क्षमता तैयार कर रहे हैं।

भारत में लगभग 93 प्रतिशत लोग अनौपचारिक रोजगार वाले हैं। इनमें से अधिकतर को औपचारिक व्यवसायिक प्रशिक्षण नहीं मिला है। प्रधानमन्त्री कौशल विकास योजना के अन्तर्गत अभी तक 9 लाख लोगों को कौशल प्रदान किया जा

चुका है। दुनिया भर में विभिन्न देशों के कौशल विकास कार्यक्रमों में इसे जगह मिली है। अपरेन्टिस मॉडल से उद्योगों के लिए तैयार श्रम बल तैयार होता है, दुनिया के अधिकतर देशों ने अपरेन्टिस मॉडल लागू किया है। जापान में एक करोड़ से अधिक अपरेन्टिस मॉडल है, जर्मनी में 30 लाख, अमेरिका में 5 लाख अपरेन्टिस है, लेकिन भारत में केवल 3 लाख ही अपरेन्टिस है। भारत की विशाल जनसंख्या और युवाओं की संख्या को देखते हुए यह आंकड़ा बहुत ही कम है, क्योंकि यहाँ 30 करोड़ से अधिक लोग 18 से 35 वर्ष के आयु वर्ग में आते हैं। अपरेन्टिस अधिनियम 1961 को 2014 में संशोधित किया गया, जिसमें गैर इंजीनियरिंग पेशे में अपरेन्टिस के लिए संभावनाएँ बढ़ सके और उद्योगों को वैकल्पिक व्यवसाय करने वाले मिल सकें। राष्ट्रीय अपरेन्टिसशिप संवर्धन योजना के तहत वित्तीय सहायता के रूप में रु० 1500/- वार्षिक वजीफा दिया जाता है और नियोक्ता को प्रशिक्षण पर हुए बुनियादी खर्च के रूप में 7500 रुपये दिये जाते हैं।

भारतीय कामगार रोजगार के लिए भारत से बाहर विशेषकर निर्माण और रिटेल जैसे मजदूरी के कामों के लिए पश्चिम एशिया में तथा तकनीकी कौशल के लिए यूरोपीय देशों में जाते हैं। कर्नाटक तथा केरल जैसे राज्य अपेक्षाकृत सम्पन्न जैसे देश के बजाय बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों से माइग्रेशन देखा गया है और कौशल वाले तथा कौशल के बगैर कामों के लिए भारत से बाहर जाने वाले कुल कामगारों में 25% इसी प्रदेश से हैं। भारतीय कामगारों को दुनिया भर में जाने में सहायता करने के लिए कौशल विकास एवं उद्यमिता मन्त्रालय ने विदेश मन्त्रालय के साथ मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय कौशल केन्द्र स्थापित किया है, जो विदेश गमन से पहले की जानकारी और बुनियादी भाषाई कौशलों समेत कौशल प्रशिक्षण प्रदान करता है। तीव्र आर्थिक वृद्धिके मामले में जनांकिक वृद्धिके समर्थ का इस्तेमाल करने के लिए वृहद स्तर पर कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने की आवश्यकता है, जिससे अधिक नौकरियाँ मिल सकें और उत्पादन भी बढ़ सके।

सन्दर्भ सूची :

1. राष्ट्रीय कौशल विकास एवं उद्यमिता नीति, 2015
2. राष्ट्रीय कौशल विकास समन्वयक बोर्ड योजना आयोग
3. कृष्ण के०पी० (2018, सितम्बर), जनांकिक लाभ का उपयोग, योजना लोधी रोड, नई दिल्ली, पृष्ठ सं० 45 से 51

RECENT GST CHANGES IN INDIA (2025-2026)

Arti Dixit
Department of Commerce

1. Simplified GST Tax Structure

India introduced major GST reforms to simplify taxation. The previous slabs of 5%, 12%, 18% and 28% plus cess have been streamlined into three main categories:

- 5% - Essential goods and services
- 18% - Standard goods and services
- 40% - Luxury and sin goods

This aims to reduce confusion and classification disputes.

2. 40% Slab for Luxury & Sin Goods

Luxury and harmful products are now taxed at 40%. These includes luxury cars, large bikes, aerated drinks, yachts, private aircraft, and betting or casino activities. This ensures higher taxation on non-essential goods.

3.Reduction in GST on Essential Items

GST has been reduced or removed on essential items to support affordability and small businesses.

- Lifesaving medicines - 0% GST
- Leather, footwear, textiles & handicrafts - 5%
- Small cars & two-wheelers - reduced rates
- Educational materials - GST free

4. Items becoming Cheaper

Lower GST rates have reduced prices of packaged foods, medicines, insurance services, appliances, and auto parts, helping boost consumer demand.

5. Compliance & Digital Changes

New rules strengthen transparency and compliance

- Mandatory multi-factor authentication
- Stricter e-way bill monitoring
- Lower e-invoicing threshold
- Improved Input Tax Credit reconciliation

6. Refund & Liquidity Improvements

The 2026 budget extended 90% provisional refunds to inverted duty cases helping businesses maintain better cash flow.

7. Economic Impact

GST reforms aim to boost consumption, improve compliance, increase government revenue, and promote ease of doing business.

Objectives of GST Reforms

- Simplify Taxation
- Reduce prices on essentials
- Encourage economic growth
- Improve ease of doing business
- Strengthen transparency and compliance

रस और ब्रह्म का अद्वैत

डॉ० चन्द्रकिशोर शास्त्री
संस्कृत विभाग

काव्य के क्षेत्र में रस और ब्रह्म दो पृथक् तत्त्व नहीं, बल्कि एक ही सत्य के दो आयाम हैं। रस उस सत्य का सौन्दर्यात्मक अनुभव है, ब्रह्म उसका तत्त्वात्मक साक्षात्कार। जहाँ रस है, वहाँ ब्रह्म का बीज निहित है; और जहाँ ब्रह्म है, वहाँ रस की पूर्णता। काव्य इस बीज को अंकुरित करता है, दर्शन उसे वृक्ष बनाता है और अनुभूति उसके फल का आस्वादन कराती है।

भारतीय वाङ्मय के निर्मल आकाश में 'अहं ब्रह्मास्मि' (मैं ब्रह्म हूँ), 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' (यह सम्पूर्ण जगत् वास्तव में ब्रह्म ही है) और 'वासुदेवः सर्वम्' जैसे महावाक्य ऐसे दीप्तिमान नक्षत्र हैं, जो मानव चेतना को सीमित 'अहं' की संकीर्णता से उठाकर विराट सत्य की अनुभूति कराते हैं।

यह दृश्यमान जगत्- जड़ और चेतन, अणु और विभु- उसी परब्रह्म की दिव्य रश्मियों का प्रसार है। जैसे मृत्तिका के बिना घट की और सुवर्ण के बिना आभूषण की सत्ता की समुत्प्रेक्षा असम्भव है, वैसे ही परमचैतन्य ब्रह्म के बिना संसार का अस्तित्व कल्पनामात्र है। अनादि, अनन्त और अव्यक्त ब्रह्म की वही चेतना सर्वत्र व्याप्त होकर हमारे भीतर प्राणरूप में स्पन्दित होती है और समस्त प्राणियों के जीवन का आधार बनती है। जिस प्रकार निराकार विद्युत ऊर्जा भिन्न-भिन्न यन्त्रों में प्रकाश, गति और ऊष्मा के रूप में प्रकट होती है, उसी प्रकार एक ही ब्रह्मतत्त्व विविध देहों और रूपों में चेतना, विचार और क्रिया के रूप में अभिव्यक्त होता है। वेदान्त जहाँ तर्क और विवेक के द्वारा इस सत्य को प्रतिष्ठित करता है, वहीं भक्ति मार्ग इसी सत्य को प्रेम और करुणा के माधुर्य से आत्मसात कराता है।

आध्यात्मिक जीवन में आत्मा को जानने और अपने अस्तित्व से एकाकार होने के अनेक मार्ग बताए गए हैं। कोई भक्ति का मार्ग अपनाता है, कोई ज्ञान का, कोई कर्म का और कोई ध्यान का। सभी मार्ग अलग दिखते हैं, लेकिन उनका लक्ष्य एक ही होता है, स्वयं को जानना, और परम सत्य से जुड़ना। सभी मत यही कहते हैं कि जब तक मन में द्वैत है, यानी 'मैं' और 'वह', 'अपना' और 'पराया' का भाव है, तब तक पूर्ण आध्यात्मिक शान्ति नहीं मिल सकती।

उपनिषदों में एक प्रसिद्ध सूत्र है 'नेति-नेति', जिसका अर्थ है यह भी नहीं, वह भी नहीं। इसका भाव यह है कि आत्मा को किसी एक रूप, नाम या विचार में बाँधा नहीं जा सकता। आत्मा न शरीर है, न मन, न विचार, न भावना। जब हम इन सबको एक-एक करके नकारते जाते हैं, तब अन्त में जो शेष रह जाता है, वही सत्य है। आध्यात्मिक अनुभव की चरम अवस्था में ऐसा समय आता है, जब न साधक रहता है, न साधना और न ही साध्य। सब कुछ एक हो जाता है। यही अवस्था सत्-चित्-आनन्द की कहलाती है, जहाँ केवल अस्तित्व, चेतना और आनन्द शेष रहता है।

धर्मग्रन्थ आत्मा को सीधे परिभाषित नहीं करते, बल्कि पहले यह बताते हैं कि आत्मा क्या नहीं है। जैसे मूर्ति गढ़ने में पहले फालतू पत्थर हटाए जाते हैं, वैसे ही आत्मज्ञान में अनात्म तत्वों का निषेध किया जाता है। जब झूठे आवरण हट जाते हैं,

तब सत्य स्वयं प्रकट हो जाता है। सत्य को कहीं बाहर खोजने की जरूरत नहीं होती। वह तो सदैव चमक रहा है, पर हमारे चारों ओर फैला कृत्रिम प्रकाश यानी अहंकार, इच्छाएँ, डर और भ्रम उसकी रोशनी को ढक देता है। जैसे ही यह आवरण हटता है, सत्य का दर्शन हो जाता है। जब सत्य का अनुभव होता है, तब सारे प्रश्न शान्त हो जाते हैं। मन स्थिर हो जाता है और भीतर आनन्द की ध्वनि गूँजने लगती है। यही ब्रह्म है, यही आत्मा है और यही जीवन का परम लक्ष्य है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने अद्वैत के इस गूढ़ सिद्धान्त को भक्ति की सरस सरिता में प्रवाहित कर जनसाधारण के लिए सहज बना दिया। ‘सीयराम मय सब जग जानी’ की समुद्धोषणा में अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, समग्र दर्शन और अनुभूति का अद्भुत समन्वय है। यहाँ ब्रह्म निर्गुण न रहकर सगुण सौन्दर्य से आलोकित हो उठा है। जब साधक इस सत्य को हृदयंगम कर लेता है, तब उसके राग-द्वेष का अन्धकार स्वतः विलीन हो जाता है और उसके लिए सम्पूर्ण सृष्टि वन्दनीय बन जाती है। यही वह परम अवस्था है, जहाँ ज्ञान, कर्म और भक्ति की त्रिवेणी में स्नान कर मानव जीवन धन्य-धन्य और कृतार्थ हो जाता है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत् ॥

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्ति:!!!

विकसित भारत का आधार : सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम

डॉ० राघवेन्द्र त्रिपाठी
अर्थशास्त्र विभाग

भारतीय रिजर्व बैंक यानी आरबीआई ने बीते दिनों बैंकों के लिए माइक्रो एण्ड स्मॉल एण्टरप्राइजेज (एमएसई) को गिरवी मुक्त या बिना किसी गारण्टी के ऋण देने की सीमा को 10 लाख से बढ़ाकर 20 लाख रुपये कर दिया। इस वर्ष अप्रैल के बाद से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) को दिए जाने वाले ऋण पर रिजर्व बैंक का यह फैसला प्रभावी होगा। क्रेडिट गारण्टी फण्ड ट्रस्ट फॉर माइक्रो एण्ड स्मॉल एण्टरप्राइजेज ऋण लेने वाले उद्यमियों की गारण्टी लेगा। निश्चित रूप से आरबीआई की यह पहल एमएसएमई को बढ़ावा देने के लिए एक कारगर पहल सिद्ध होगी। ध्यातव्य रहे कि इस बार के बजट में वित्त मंत्री ने एमएसएमई की क्रेडिट सुविधा बढ़ाने और उनके लिए अलग से 10,000 करोड़ रुपये का फण्ड बनाने की घोषणा की है।

आर्थिक समीक्षा 2025-26 बताती है कि एमएसएमई भारत की औद्योगिक अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करते हैं। यह क्षेत्र देश के कुल विनिर्माण उत्पादन का लगभग 35.4 प्रतिशत, कुल निर्यात का लगभग 48.58 प्रतिशत और सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का लगभग 31.1 प्रतिशत योगदान करता है। देश में 7.47 करोड़ से अधिक उद्यम, जो लगभग 32.82 करोड़ लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं, इस क्षेत्र को कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा रोजगारप्रदाता बनाते हैं। वैश्विक स्तर पर भी लगभग 90 प्रतिशत व्यवसाय एमएसएमई स्वरूप में ही हैं और कुल वैश्विक रोजगार का 50 प्रतिशत से अधिक हिस्सा प्रदान करते हैं। भारत का विनिर्माण क्षेत्र वैश्विक एकीकरण की दिशा में अग्रसर है, ऐसे में एमएसएमई की भूमिका प्रभावी आपूर्ति-श्रृंखला, स्थानीय मूल्य संवर्धन और समावेशी क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देने में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

गौरतलब है कि 2024 में उद्यमी भारत-एमएसएमई दिवस के अवसर पर यशस्वी अभियान का शुभारम्भ किया गया, जिसका उद्देश्य 2029 तक लैंगिक समानता को बढ़ावा देना और महिला स्वामित्व वाले एमएसएमई में सार्वजनिक खरीद में न्यूनतम तीन प्रतिशत भागीदारी सुनिश्चित करना है। गतवर्ष मिजोरम से संचालित अभियान से लगभग 8,400 महिला एमएसएमई की समस्याओं पर देना होगा ध्यान फाइल स्वामित्व वाले एमएसएमई का पंजीकरण सम्भव हुआ। इसके तहत अब तक 12.5 लाख से अधिक महिला स्वामित्व वाले एमएसएमई के पंजीकरण को सुगम बनाया गया है। संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन (यूएनआईडीओ) द्वारा प्रकाशित औद्योगिक विकास रिपोर्ट 2024 में भारत का उल्लेख उभरती औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं के सन्दर्भ में किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार भारत जैसे देशों में विनिर्माण क्षेत्र का विस्तार तेजी से हो रहा है और औद्योगिक विविधीकरण बढ़ रहा है। इसमें यह भी कहा गया है कि भारत वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में अपनी भागीदारी मजबूत करने की क्षमता रखता है। हालांकि एमएसएमई क्षेत्र ने उल्लेखनीय प्रगति की है, फिर भी कुछ संरचनात्मक चुनौतियाँ अब भी मौजूद हैं। भुगतान में देरी की समस्या, तकनीकी आधुनिकीकरण की कमी, सीमित वैश्विक ब्राण्ड पहचान जैसे मुद्दे इस क्षेत्र की गति को प्रभावित करते हैं। पंजीकरण की संख्या निश्चित रूप से एक सशक्त तस्वीर पेश

करती है, परन्तु उसके साथ आवश्यकता प्रति उद्यम उत्पादकता, गुणवत्ता मानकों और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को सुदृढ़ करने की है। यदि इन चुनौतियों का समाधान समयबद्ध एवं प्रभावी नीति के जरिए किया जाए तो एमएसएमई देश की आर्थिक छलांग का बड़ा आधार बन सकते हैं।

दक्षिण कोरिया और जापान की अर्थव्यवस्था की सुदृढ़ता में लघु एवं मध्यम उद्योगों की भूमिका स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। दक्षिण कोरिया ने लघु और मध्यम उद्यमों के लिए रूपरेखा अधिनियम (फ्रेमवर्क एक्ट ऑन स्मॉल एण्ड मीडियम एण्टरप्राइजेज) तथा लघु, मध्यम उद्यम एवं स्टार्टअप मन्त्रालय (मिनिस्ट्री ऑफ एमएसएमई एण्ड स्टार्टअप्स) के माध्यम से छोटे उद्योगों को अनुसन्धान-विकास सहायता, स्केल-अप रणनीति और कानूनी संरक्षण से जोड़ा है। वहीं दूसरी ओर जापान ने लघु एवं मध्यम उद्यम मूल अधिनियम (स्मॉल एण्ड मीडियम एण्टरप्राइजेज बेसिक एक्ट) के तहत अपने उद्योगों को आपूर्ति-श्रृंखला आधारित मॉडल, उच्च गुणवत्ता मानकों और तकनीकी नवाचार से सशक्त किया है। इन दोनों मॉडलों की समानता समानता यह है कि उन्होंने एमएसएमई हेतु एक पोषणात्मक व्यवस्था ही गणित नहीं की है, अपितु उन्हें वैश्विक प्रतिस्पर्धा के स्तर तक पहुँचाने की संरचित व्यवस्था विकसित की। यदि भारत भी इसी प्रकार स्पष्ट स्केल-अप नीति और गुणवत्ता-प्रधान औद्योगिक समन्वय को सुदृढ़ करे, तो एमएसएमई विकसित भारत की आधारशिला को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।

आर्थिक-सामाजिक विकास में एमएसएमई कम पूँजी लागत पर पर्याप्त रोजगार सृजित करता है, सहायक इकाइयों के रूप में बड़े उद्योगों को सहयोग देता है और ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में उद्योगीकरण को बढ़ावा देता है। ऐसे में भारत को एमएसएमई के लिए दीर्घकालिक और किफायती पूँजी उपलब्ध कराने, तकनीकी उन्नयन को प्रोत्साहित करने तथा निर्यात-उन्मुख ब्राण्ड निर्माण को बढ़ावा देने की दरकार है। समयबद्ध भुगतान तन्त्र का क्रियान्वयन और हरित उत्पादन पद्धतियों को प्रोत्साहन भी अनिवार्य होंगे। यदि एमएसएमई को केवल संरक्षण नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनने की स्पष्ट रणनीति दी जाए, तो वे विकसित भारत की आर्थिक संरचना को निर्णायक रूप से सुदृढ़ कर सकते हैं।

महाविद्यालय प्रबन्ध समिति

1. श्री महेन्द्र कुमार शुक्ल	अध्यक्ष
2. श्री बाँके बिहारी शुक्ल	उपाध्यक्ष
3. श्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ल 'एडवोकेट'	मन्त्री/प्रबन्धक
4. श्री राकेश कुमार मिश्र	संयुक्त मन्त्री
5. श्री शंकर दत्त त्रिपाठी 'एडवोकेट'	सदस्य
6. श्री सुधीर कुमार मिश्र	सदस्य
7. श्री प्रेम नारायण गुप्त	सदस्य
8. श्री महेश चन्द्र मिश्र	सदस्य
9. श्री सत्येन्द्र प्रकाश त्रिपाठी	सदस्य
10. श्री दिनेश कुमार शुक्ल	सदस्य
11. श्री राकेश कुमार तिवारी	सदस्य
12. प्रो० (डॉ०) विपित्य कुमार कटियार	पदेन सदस्य
13. डॉ० अमित कुमार दुबे	सदस्य / प्रतिनिधि
14. श्री दिनेश कुमार गौतम	सदस्य / प्रतिनिधि
15. श्री अजय कुमार मिश्र	सदस्य / प्रतिनिधि



श्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ल 'एडवोकेट'

सचिव/मन्त्री/प्रबन्धक

